सरल रचना-विधि

प्रथम भाग

—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

सरल रचना-विधि

Simple Hindi Composition

PART I

(For 3rd and 4th Classes)

BY

KRISHNA CHANDRA VIDYALANKAR

REVISED BY

Harish Chandra, M. A. B. T.
Headmaster
D. A. V. High School, New Delhi

1st. Edition **1937.** *Price -/6/-*

Publishers :–
Sharada Mandir Ltd ,
DELHI.

Printers:–
Chandra Printing Press,
DELHI.

अध्यापकों के प्रति

आठ आठ और दस दस वर्ष तक हिन्दी पढ़ने के बाद भी अधिकांश विद्यार्थी हिन्दी लिखना नहीं जानते। आश्चर्य की बात यह है कि जिन प्रान्तोंमें हिन्दी मातृभाषा भी है, वहांके विद्यार्थी भी हिन्दीलेखन में बड़ी भद्दी भद्दी भूलें करते हैं। इसका कारण यह है कि हिन्दी रचना (Composition) पर हिन्दी के अध्यापक बहुत ही कम ध्यान देते हैं। अंग्रेजी का विद्यार्थी जब दूसरी तीसरी रीडर पढ़ने के साथ रचना के नियमों की भी शिक्षा पाने लगता है, वहां हिन्दी का विद्यार्थी आठ और दस साल तक भी हिन्दी रचना के नियमों से अनभिज्ञ रहता है। हिन्दी अध्यापकों के इधर ध्यान न देने का एक कारण यह भी है कि इस विषय पर पुस्तकें भी नहीं लिखी गईं। इसी अभाव की पूर्ति का हमने प्रयास किया है। हमने इस बात का ध्यान रक्खा है कि रचना के सभी अंग—शब्द और वाक्य, कहानी, लेख (निबन्ध) और पत्र लेखनादि क्रमबद्ध और सरल रूप में आजावें। हमारा विश्वास है कि इससे हिन्दी अध्यापकों को पढ़ाने में और विद्यार्थियों को हिन्दी नियम समझने में बहुत सुविधा होगी।

किसी भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए नियमों का

अभ्यास अत्यन्त आवश्यक है। विद्यार्थी जितना अधिक स्वयं लिखेगा, उतना अधिक उसका अधिकार बढ़ेगा। इसलिए हिन्दी अध्यापकों से निवेदन है कि वे इस पुस्तक में दिये गये अभ्यासों पर ही सन्तोष न कर लें, अपितु हिन्दी रीडरों या अन्य पुस्तकों से भी प्रत्येक नियमसम्बन्धी अभ्यास कराते रहें।

यह पुस्तक तीसरी और चौथी दो श्रेणियों के लिए लिखी गई है। विविध स्कूलों में विद्यार्थियों की योग्यता का स्टैण्डर्ड भिन्न भिन्न होता है। इसलिए अध्यापकों को अपने स्कूल का स्टैण्डर्ड देखकर यह निश्चय कर लेना चाहिये कि कौन कौन से प्रकरण किस किस श्रेणी में पढ़ाने हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि इस पुस्तक से अध्यापकों की बहुत सी कठिनता दूर हो जावेगी और वे विद्यार्थियों को हिन्दीरचना के नियम सरलता से समझा सकेंगे।

—लेखक

सरल रचनाविधि

(प्रथम भाग)

शब्द और वाक्य

अक्षरक्रम

अभ्यास १

अनार—साहब—माता—लाला—ईंट
घड़ी—पानी—गीत—ऐनक—चाचा—ओला
टोकरी।

इन सब शब्दों को अक्षरक्रम से लिखो :—

अनार	गीत	पानी
ईंट	......	......
......	......	......
......	......	......

अभ्यास २

सेव—हार—अनार—किताब—जूता—पैंसिल—पपीता—इमली—टोपी—पगड़ी—ऊखल—धुआं-छाया—सीताराम—नारंगी—केसर—गाड़ी—खेल—खान—घन—दुबला—घास—दीवाली—धुन—गप्प—ऊंट—अच्छा—राजा—आम—हरिश्चन्द्र ।

इन शब्दों को अक्षरक्रम से लिखो :—

अच्छा	......	......
अनार	......	......
आम	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......

शुद्ध लेखन

मैं पिताजी को रुपे भेजने के लिए पत्तर लिखुंगा।

अच्छे बलक हमेसा सवच्छ कपड़े पहन्ते हैं।

ये दोनों वाक्य ठीक तरह से लिखे नहीं गये। लिखने में कई भारी गल्तियां रह गई हैं। इनका शुद्ध रूप यह होगा·

मैं पिताजी को रुपये भेजने के लिए पत्र लिखूंगा।

अच्छे बालक हमेशा स्वच्छ कपड़े पहनते हैं।

शब्द को जिस तरह बोला जाता है, ठीक उसी तरह लिखने की कोशिश करनी चाहिये। इसका ख़्याल न करने से शब्द अशुद्ध हो जाता है। शब्दों को शुद्ध लिखने का अभ्यास करने के लिए अपनी हिन्दी की किताब की कुछ पंक्तियां रोज अपनी कापी में नक़ल करनी चाहिए।

श ष का भेद बहुत से बालक नहीं समझते। 'शरीर' और 'भाषा' में श और ष ही लिखना चाहिए। इसी तरह व और ब में कई विद्यार्थी ग़ल्ती कर जाते हैं। 'वेग' को 'बेग' और 'बाल' को 'वाल' नहीं लिखना चाहिये।

संयुक्त अक्षरों को भी शुद्ध रूप से लिखने की आदत डालनी चाहिये। इन सब के लिए अच्छी पुस्तकों को खूब पढ़ना चाहिये।

अभ्यास ३

नीचे लिखे वाक्यों में कुछ शब्दों में हिज्जे अशुद्ध लिखे गये हैं। उन्हें ठीक करो :—

१—विनोद ने गणीत के पांच प्रस्न नीकाले हैं।

२—हम सूबः उठते हैं और घुमने जाते हैं।

३—प्रमात्मा सब पर क्रिपालु है, चन्द, सुर्य, हवा, पानी सब के लिए बनाये गये हैं।

४—मां बालक से परेम करती है।

५—भारतवर्श हमारी मातृभूमि है।

६—गडरिये का लड़का हमेसा झुठ बोला करता था।

७—मैं किताब पढ़ते पढ़ते सो गया।

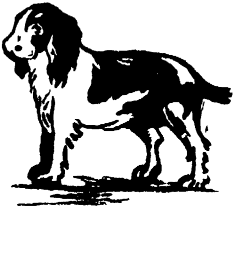
८—स्टेषन पर गाड़ी आ गई।

९—विद्या खूब कोशश से सिखनी चाहिए।

१०—परसन्न रहने से सवासथ्य अछछा होता है।

अभ्यास ४

नीचे कुछ शब्द लिखे हैं। इनमें शुद्ध और अशुद्ध शब्दों को पृथक् पृथक् कर दो :—

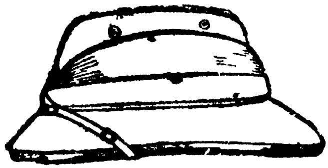


सलेट—छाता—पुस्तक—

कलम—खीलोना—कूत्ता—हाथ—

सीर—आम—गूड़िया—मेला—

सिपाही—फूटबाल—कुड़सी—
नकृपा— पतंग—कोट—
पिनसल- माता- रोटि-पजामा
दाल—चारपाई—घि—टोप



शरीर के अवयव

अभ्यास ५

नीचे शरीर के कुछ अवयवों के नाम दिये हैं। उन्हें नीचे की सूची म अपने अपने स्थानों में लिखो—

बाल—कलाई—पंजा—गिट्टा—गाल—हथेली—
होंठ—कन्धा - एड़ी - दांत - मुट्ठी—पलक —गला—
जीभ—अंगूठा—कोहनी—कान—आंख—नाखून—
नाक—घुटना—ठोड़ी—अंगुली—कमर

सिर	बांह	टांग
बाल	कलाई	पंजा
......		
......		
...		
	.. .	......
		......
......	......	......

परस्परविरोधी शब्द

अभ्यास ६

नीचे कुछ शब्द लिखे हैं, उनके विरोधी शब्द लिखो -

कृतज्ञ	कृतघ्न	दुर्लभ	
दुराचार	सदाचार	सफ़ेद	
धर्म	अधर्म	दुखी	......
हां	नहीं	ठीक	......
पहला	......	खुला हुआ	......
नरम	......	हार	......
मरद	......	मित्र	......
प्रकाश	......	मेहनती	......
बड़ा	......	बूढ़ा	......
अच्छाई	......	अच्छा	......
खाली	......	फैला हुआ	......
भारी	......	फटा पुराना	......
मोटा	......	पक्का	......
दुर्बल	......	सुस्त	......

एक अर्थ वाले शब्द

अभ्यास ७

नीचे कुछ शब्द लिखे हैं। उनमें से ऐसे शब्द चुन चुन कर एक साथ रखो, जिनके अर्थ एक से हों।

वस्त्र—साफ़—बादशाह जंगल शेर—किताब—कपड़ा—सुथरा—मकान—पुस्तक—चिट्ठी—सब्ज़ी—चाबी—सिंह—तस्वीर—मेज़—राजा—वन—भवन—चित्र—पत्र—ताली—तरकारी—टेबल।

मेज़	टेबल	......	......
चाबी	ताली	......	......
......	......	......	......
......	......	......	......
......	......	......	......
......	......	......	......

दो अर्थों वाले शब्द

कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जिनके अर्थ दो या तीन होते हैं।

अभ्यास ८

नीचे कुछ वाक्य लिखे हैं, जिनमें ऐसे शब्द आये हैं। उनके अर्थ बताओ—

(१) क—सरला ने हार पिरोया।

ख—राजा के मरते ही फौज हार गई।

(२) क—हिरन बड़ा सुहावना जानवर है।

ख—शेर को देखते ही वह हिरन होगया।

(३) क—सरकार प्रजा से कर लेती है।

ख—मैं रोटी खा कर स्कूल जाता हूँ।

ग—उसके कर में लक्ष्मी है।

(४) क—इस कुंए की माल लम्बी है।

ख—मेरा माल अभी तक स्टेशन पर नहीं पहुंचा।

(५) मलमल के कपड़े का मल साबुन मलमल करके निकाल दिया।

(६) क—मेरा मत है कि ईश्वर है।

ख—बेटा, गुस्सा मत कर।

(७) क—कपास जल्दी धुन दे।

ख—उसे तो पढ़ने की धुन है।

(८) क —पानी डोल मत।

ख डोल भर दे।

(९) क —अलमारी का खाना छोटा है।

ख मेरा खाना (भोजन) लाओ।

(१०) क—सोना बहुत महंगी धातु है।

ख—भोजन के एकदम बाद सोना बुरा है।

(११) क—दूध के चार घूंट पीले

ख—मेरा गला तो न घूंट।

(१२) इस तार ने अंग्रेजों का तार दिया।

(१३) ख—गंगाराम की समाधि पर समाधि लगाई।

(१४) नदी के तीर पर तीर चलाने का अभ्यास करो।

वाक्य और उसके भेद

जब मैं छोटा बालक था और स्कूल जाया करता था, तब यह देखकर हैरान होता था कि जब मैं एक लाइन भी ठीक ठीक नहीं लिख सकता, लोग इतनी बड़ी किताबें कैसे लिख लेते हैं। मेरे अध्यापक मुस्करा कर मुझे कहते—अशोक, तुम तो ठीक नहीं लिखते। इसके



बाद वे मेरी ग़ल्तियों पर नीली या लाल पेंसिल से निशान लगाते और मुझे मेरी भूलें समझाते। मैं उन ग़ल्तियों को सुधारने लगा। ज्यों ज्यों मैं बड़ा होता गया, अध्यापकों की सहायता से अपनी ग़ल्तियां ठीक करता गया। अब मैं ठीक ठीक लिखने लगा हूं।

तुम भी क्या जानना चाहते हो कि ठीक ठीक कैसे लिखा जाता है? मुझे विश्वास है कि तुम जरूर जानना चाहते हो। जितना तुम समझते हो, लिखना उतना मुश्किल नहीं है। लिखना शुरु करने से पहिले वाक्य लिखना

सीखना चाहिये। अपने विचारों को शब्दों में रखने से वाक्य बनता है। हम आपस में बातचीत करते हुए अपने विचार वाक्यों में एक दूसरे पर प्रकट करते हैं। इन्हें हम कभी कभी लिखते भी हैं। जब मैं लिखता हूं—

सुभाष बहुत अच्छा बालक है।

तब मैं सुभाष के बारे में कुछ कहता हूं। इसके बाद मैं उसके बारे में क्या विचार करता हूं, यह लिखता हूं।

उसके बारे में मैंने कहा है कि वह बहुत अच्छा बालक है।

इस प्रकार प्रत्येक वाक्य के दो भाग होते हैं।

(१) जिस के बारे में हम कुछ कहते हैं और (२) उसके बारे में जो कुछ कहते हैं।

पहले भाग को हम करने वाला या कर्ता कह सकते हैं। 'वह जाता है,' 'मैं खाता हूं' और 'राम पढ़ता है' में वह, मैं और राम कर्ता हैं, क्योंकि इनके बारे में कुछ सोचा गया है या कहा गया है।

अभ्यास ६

नीचे लिखे वाक्यों में कर्ता चुनो :—

गुरूजी स्कूल पधारे हैं।

आप कब चलेंगे ?

ईश्वर-भक्त परमात्मा पर भरोसा रखता है।

बच्चा गुड़िया से खेलता है।

पाठ याद करो।

अभ्यास १०

नीचे कुछ कर्ता दिये गये हैं, तुम उनके बारे में वाक्य बनाओ:—

कृष्ण चन्द्र.........................

गौ..........................

मैं..........................

मेरा स्कूल.......................

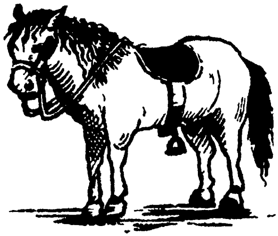
भारतवर्ष.......................

राजा.........................

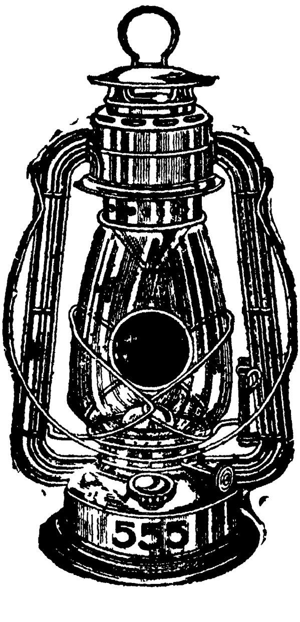
अभ्यास ११

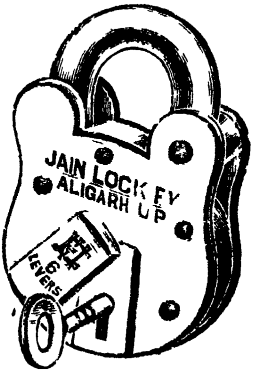
जिन जिनके चित्र नीचे दिये गये हैं, उन्हें कर्ता मानकर वाक्य बनाओ :—











वाक्य में शब्दों का क्रम

विजय और सुधीर ने अपनी अपनी कापियों पर कुछ वाक्य इस तरह लिखेः—

विजय की कापी	सुधीर की कापी
मैं दौड़ता	दौड़ता हूँ मैं
सरला किताब पढ़ती है	किताब सरला पढ़ती है
भाई बहिन एक साथ खेलते हैं	खेलते हैं भाई बहिन एक साथ
मैंने मोर देखा है	है देखा मोर मैने

दो लड़कों ने एक जैसी बातों को अलग अलग प्रकार से लिखा है। दोनों ने वाक्य के दोनों भाग लिखे हैं। लेकिन तुम यह भी कह दोगे कि विजय ने ठीक लिखा है और सुधीर ने ग़लत। लेकिन इसका कारण भी जानते हो? विजय ने वाक्य लिखते हुए इस बात का ध्यान रक्खा



कि पहले क्या लिखना चाहिये और पीछे क्या? सुधीर ने इस बात का ध्यान नहीं किया। वाक्य लिखते हुए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कर्ता (काम करने वाला)

पहले और क्रिया अन्त में। 'मैं दौड़ता हूं' में 'मैं' दौड़ने वाला हूं, इस लिए पहले रखा है। इसी तरह ऊपर लिखे में 'सरला' पढ़ने वाली है, 'भाई बहिन' खेलने वाले हैं, 'मैं' देखने वाला हूं, इसलिए ये सब वाक्य के शुरू में रखे गये हैं। 'पढ़ती है', 'खेलते हैं', 'देखता हूं', ये सब क्रियायें हैं। बाक़ी सब शब्द कर्ता और क्रिया के बीच में रखे जाते हैं। विजय ने इस नियम का ध्यान रखा और सुधीर ने नहीं, इसीलिए उसके वाक्य अशुद्ध हुए।

कविता में इस प्रकार का क्रम बहुत ज़रूरी नहीं है। उसमें कर्ता पीछे भी आ जाता है। जैसे—

चढ़ सफ़ेद छोटी घोड़ी पर
खड़िया पट्टी नौकर साथ,
जा पहुंचा बालक चटशाला
और नवाया गुरु को माथ।

अभ्यास १२

नीचे लिखे वाक्यों को ठीक करो—

(क) भेजे पिताजी ने रुपये डाकखाने की मार्फ़त।

(ख) गई सीता राम के साथ वन में

(ग) था सम्राट् प्रतापी बड़ा चन्द्रगुप्त मौर्य

(घ) पढ़ी है पांडवों की कथा तुमने

(ङ) बज रहा है ग्रामोफ़ोन

लिंग, वचन और क्रिया

सुभद्रा पुस्तक पढ़ता है।

हवाई जहाज़ बहुत तेज़ चलती है।

राम और कृष्ण खेलता है।

लड़का दूध पीते हैं।

इन चारों वाक्यों में शब्दों का क्रम ठीक है, किसी शब्द के हिज्जे ग़ल्त नहीं हैं। तब क्या वाक्य ठीक हैं? इनमें कोई ग़ल्ती नहीं? नहीं, ये वाक्य भी अशुद्ध हैं। इसका कारण क्या है? सुभद्रा स्त्री है, वह 'पढ़ता' नहीं, 'पढ़ती' होनी चाहिए। इसी तरह हवाई जहाज़ पुंलिंग होन के कारण उसके साथ 'चलता' है; राम और कृष्ण दो हैं, इसलिये उनके साथ 'खेलते हैं' और लड़का एक है, इसलिए उसके साथ 'पीता' होना चाहिए। इसका

मतलब यह है कि काम करने वाला अगर स्त्री या पुरुष है, तो क्रिया भी उसी के अनुसार बदलनी चाहिये और यदि कर्ता एकवचन या बहुवचन है तो क्रिया भी एक वचन या बहुवचन होनी चाहिए।

लड़की खेलती है, पीती है, पढ़ती है, सोती है, पहनती है। लेकिन

लड़का खेलता है, पीता है, पढ़ता है, सोता है, पहनता है।

इसी तरह वचन के अनुसारः—

अशोक खेलता है, पीता है, पढ़ता है, सोता है, पहनता है। लेकिन

अशोक और सुभाष खेलते हैं, पीते हैं, पढ़ते हैं, सोते हैं, पहनते हैं।

इसके अलावा वाक्य को शुद्ध बनाने के लिए दो तीन बड़े बड़े नियम और भी हैं, जिनका ध्यान रखना ज़रूरी है। मैं, हम, तू, तुम, वह और वे के साथ क्रियायें इस तरह लगती हैं—

मैं—करता हूं, जाता हूं, सोता हूं।

हम—करते हैं, जाते हैं, सोते हैं।

तू—करता है, जाता है, सोता है।

तुम—करते हो, जाते हो, सोते हो।

वह या और कोई एकवचन शब्द—

करता है, जाता है, सोता है।

वे या और कोई बहुवचन शब्द—

करते हैं, जाते हैं, सोते हैं।

जब कोई शब्द किसी दूसरे शब्द का गुण या विशेषण प्रकट करता हो, तब वह दूसरे शब्द के अनुसार मेल खाता हुआ लिखा जाता है। जैसे—

काला घोड़ा, काली घोड़ी।

बड़ा ऊंट, बड़ी बकरी।

लम्बा डंडा, लम्बे डंडे।

अभ्यास १२

नीचे लिखे वाक्यों को ठीक करो—

(क)

१—रेलगाड़ी तेज़ दौड़ता है।

२—बैल छकड़ा खींचती है।
३—मां बालक को डांटता है।
४—कोयल कू कू करता है।
५—कृष्ण मुरली बजाती थी।



(ख)

१—दस मजदूर ईंटें उठाता है।
२—मोहन भजन गाते हैं।
३—लड़के शोरगुल करता है।
४—कौवा कां कां करते हैं।
५—बुरे लोग शराब पीता है।



(ग)

१—काला घोड़े दौड़ते हैं।
२—गोरी लड़का अखबार पढ़ता है।
३—मेरा माताजी रोटी पकाती हैं।
४—प्रेमचन्दजी एक बहुत बड़ी लेखक थे।
५—नार्थ वेस्टर्न रेलवे बड़ा भारी रेलवे है।
६—दिल्ली का स्टेशन बहुत अच्छी है।

अपूर्ण वाक्य

अपूर्ण वाक्यों को पूरा करने के लिये पहले उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिये और फिर यह सोचना चाहिये

कि किस शब्द के जोड़ने से वाक्य किसी एक अर्थ को पूरे तौर पर बताता है।

अभ्यास १४

नीचे लिखे अपूर्ण वाक्यों को पूरा करो:

(क) रेलगाड़ी ......

अकबर हिन्दुस्तान का मशहूर ....

बढ़ई ने मेज़ ......

मैं ने हवाई जहाज़ पर चढ़ कर ......

आओ बाग़ में टहलने ......

(ख) ...... पूर्व से निकलता है।

...... साइकल चलाया।



...... जूते बनाये।

...... हल जोतता है।

...... रोटी पकाती है।

...... चोरी करता पकड़ा गया।

(ग) धोबी ने ...... धोये।

राजा ने हमारे देश पर ...... की।

चिट्ठीवाला रोज सवेरे ······ बांटता ······ ।

पिताजी ने मुझे ······ भेजी ।

मैंने चाकू से ······ काटा ।

धोबी गधे पर ······ लाद कर घाट ले गया ।

(घ) उसका लेख ······ है ।

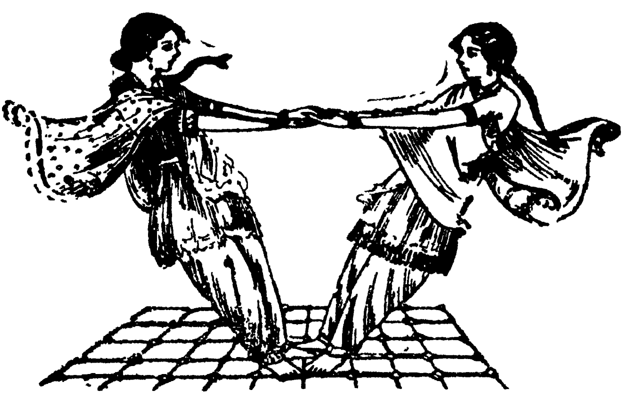
दिल्ली बहुत बड़ा ······ है ।

सिख पञ्जाब की एक बहादुर ······ है ।

अंगूर बहुत ······ हैं ।

(ङ) ······ घोड़े पर कूद कर ········ बैठा ।

··· लड़कियां खेल खेल रही हैं ।



सिपाहियों ने एक साथ उसे मारा ।

...... मोटर आ रही है।

...... पेड़ बहुत लम्बा होता है।

(च) पहाड़ी ...... बहुत भार ढोते हैं।

शरारती ...... मातापिता को ... करता है।

पांचवां ...... खोलो और सुन्दर तस्वीर ... ।

चांदनी ...... बड़ी सुहावनी ... होती है।

पुस्तक की भाषा बड़ी ...... है।

हरेक ...... को सच बोलना ...... ।

...... का फूल ...... होता है।

अभ्यास १५

सुभाष ने एक कापी पर पैंसिल से दो कहानियां लिखीं, लेकिन उसकी पैंसिल बहुत खराब थी, इसलिये उसके बहुत से शब्द पढ़े नहीं गये। वे शब्द खाली छोड़ दिये गये हैं। तुम उन शब्दों की पूर्ति करके कहानियां पढ़ो—

बुद्धिमान कौवा

......कौवे को प्यास । उसने थोड़ी......पर एक

बर्तन ……। उसमें पानी था तो सही …… थोड़ा …। कौवे की …… उस तक …… पहुंच … थी। तब …… अक्लमन्दी से …… लिया। पास ही पड़े कंकरों को एक …… करके …… डालना …… किया। इस तरह …… ऊपर …… और पानी …… चोंच तक पहुंच ……। उसने पानी ……।

लालची कुत्ता

एक कुत्ता मुँह में रोटी का टुकड़ा … एक नाले … किनारे जा … था। पानी में उसने … परछांही देखी। … कुत्ते ने समझा कि पानी में … और कुत्ता है और उसके मुँह … भी … …। लालची … ने उसकी रोटी … चाही। … वह रोटी लेने के … ज्योंही मुँह …, उसकी … रोटी भी … गिर गई और … न मिला।

विराम चिन्ह

प्यारे बालको, जब तुम कोई किताब पढ़ते हो, तब बीच बीच में कई चिन्ह अवश्य देखते होगे। ये चिन्ह बहुत प्रकार के होते हैं, लेकिन इनमें से मुख्य चिन्ह तीन ही हैं—पूर्णविराम (।, अल्प विराम (,) और प्रश्नसूचक

(!)। जो कुछ लिखा जाता है, उसका मतलब इन चिन्हों से खूब साफ़ हो जाता है।

पूर्ण विराम—जहां एक वाक्य का मतलब पूरा हो, वहां पूर्णविराम चिन्ह (।) लगाते हैं। जैसे—पण्डित जी पढ़ाते हैं। हम कबड्डी खेलते हैं। चौथी कक्षावाले लड़के फुटबाल पसन्द करते हैं।

अल्पविराम—एक वाक्य पढ़ने समय जहां थोड़ी देर ठहरना पड़े, वहाँ अल्पविराम चिन्ह (,)लगाते हैं। जैसे-ईश्वर ने हमारे लिये आकाश, जल, वायु, सूर्य, चन्द्र और पृथिवी बनाये हैं। ऊंटों को रोको, मत जाने दो। मैं दौड़ता रहा, लेकिन थका नहीं।

प्रश्नवाचक—जब कोई प्रश्न किया जाय, तब उस वाक्य के पीछे प्रश्नवाचक चिन्ह (?) लगाते हैं। जैसे—क्या तुमने पाठ याद नहीं किया? तुमने रोटी खाली?

यदि ये चिन्ह ठीक ठीक न लगे हों, तो पढ़ने और मतलब समझने में कुछ दिक्कत होती है। इसे पढ़ने में देर लगती है; मतलब भी जल्दी समझ में नहीं आता। जैसे—

दिल्ली के बादशाह अकबर ने और सब राजपूत राजाओं को तो अपने अधीन कर लिया लेकिन महाराणा प्रताप अपनी आज़ादी के लिये अड़े रहे वे हमेशा जंगलों में रहते उनके सोने उठने बैठने और खाने का कोई ठिकाना न था यदि खाना यहाँ पक रहा है तो खाने के लिए दूसरी जगह तलाश



की जा रही है और सोने के लिये तीसरी जगह गर्मी सदा और बरसात में पहाड़ों गुफ़ाओं और दरख्तों के नीचे आराम करना पड़ रहा है लेकिन इतने दुःख उठा कर भी उन्हों ने बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।

लेकिन यदि इसी में ठीक जगहों पर ज़रूरी चिन्ह लगा दिये जावें, तो तुम्हें दिक्कत न होगी। अब पढ़िये—

दिल्ली के बादशाह अकबर ने और सब राजपूत राजाओं को तो अपने अधीन कर लिया, लेकिन महाराणा

प्रताप अपनी आज़ादी पर अड़े रहे। वे हमेशा जंगलों में रहते। उनके सोने, बैठने और खाने का कोई ठिकाना न था। कभी यहां खाना पक रहा है, तो खाने के लिये दूसरी जगह तलाश की जा रही है और सोने के लिए तीसरी जगह, गर्मी, सर्दी और बरसात में पहाड़ी गुफाओं और दरख्तों के नीचे आश्रय लेना पड़ रहा है, लेकिन इतने दुःख उठाकर भी उन्होंने बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।

प्रश्नवाचक शब्द

कौन, क्यों, कहां, क्या और कब आदि का ठीक ठीक प्रयोग प्रश्नों में करना चाहिये।

अभ्यास १६

नीचे लिखे प्रश्नों में उचित शब्द लिखोः—

१—मोहन स्कूल ······ जायगा ?

२—तुम्हारा नाम ··· है ?

३—मेरी किताब ···· ले गया ?

४—इतनी दुपहरी में ···· जा रहे हो ?

५—हरिश्चन्द्र ···· पसन्द करता है ?

६—अशोक .... खेलता है ?

७—तुम शोर .... मचाते हो ?

८—.... तुम कल सवेरे भोजन करोगे ?

९—उसे .... थप्पड़ मारा ?

१०—राम ने रावण से युद्ध .... किया ?

छोटे छोटे वाक्यों का एक वाक्य

नीचे हमने कुछ छोटे छोटे वाक्य लिखे हैं। यदि उनमें कुछ कांट छांट कर दी जाय तो उनका एक वाक्य बन सकता है। बनाकर दिखाओ।

१—सुभाष आया। अशोक आया। (सुभाष और अशोक आये)।

२—राम गया। राम के पिता गये।

३—राम खाता है। राम पीता है।

४—भीम बड़ा वीर था। भीम बड़ा साहसी था।

५—सोनेसे सिक्के बनते हैं। सोनेसे गहने बनते हैं।

६—हरिश्चन्द्र आज बाज़ार गया था। बाज़ार में हरिश्चन्द्र ने किताबें खरीदीं। हरिश्चन्द्र ने सलेट खरीदी,

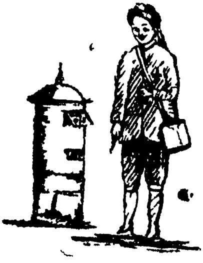
कापियां खरीदीं। (हरिश्चन्द्र ने आज बाज़ार जाकर किताबें, सलेट और कापियाँ खरीदीं)।

७—रामचन्द्रजी जङ्गल में गये थे। रामचन्द्रजी ने जंगल में राक्षसों को मारा। रामचन्द्रजी ने जंगली जानवरों का शिकार किया।

८—एक कुत्ता लोमड़ी के पीछे दौड़ा। कुत्ते ने लोमड़ी की टांग पकड़ ली।

९—जंगली कबूतर टूटे फूटे घरों में रहता है। जंगली कबूतर खण्डहरों में रहता है। जंगली कबूतर पुराने कुओं में रहता है। जंगली कबूतर पेड़ों के खोखलों में रहता है।

१०—पोस्टमैन आता है। वह लैटरबक्स खोलता है। वह अन्दर पड़े हुए पत्रों को ले जाता है।



११—मैं मेला देखने गया। वह मेला देखने नहीं गया।

१२—मैंने उसे मुंह मांगे दाम देने को कहा। उसने चीज़ मुझे नहीं बेची।

१३—वह बरसात में दो घण्टे तक नहाता रहा। वह बीमार पड़ गया।

१४—सूर्य का उदय हुआ। कोहरा दूर हो गया।

१५—रामदीन अच्छी मिठाई बनाता है। रामदीन स्कूल का हलवाई है।

१६—उसने तलवार निकाल ली। वह शत्रु पर कूद पड़ा।

१७—तुम्हें सख्त मेहनत करनी चाहिये। तुम परीक्षा में पास हो जाओगे।

दो प्रकार के वाक्य

क—राम ने आम खाया।

ख—आम राम से खाया गया।

क—मैं काम नहीं करता हूं।

ख—काम मुझ से किया नहीं जाता है।

क—मास्टरजी विद्यार्थियों को पढ़ा रहे हैं।

ख—विद्यार्थी मास्टरजी द्वारा पढ़ाये जा रहे हैं।

एक ही बात को दो तरह के वाक्यों में लिखा जा

सकता है। प्रथम प्रकार के वाक्य में कर्ता पहले आता है और दूसरे प्रकार के वाक्य में कर्ता बीच में आता है। इसी तरह क्रिया भी बदल जाती है। 'राम ने आम खाया' इसका 'राम ने' दूसरे प्रकार के वाक्य में 'राम से' हो गया और उसका क्रम भी बदल गया। इसी तरह क्रिया 'खाया' दूसरे वाक्य में 'खाया गया' होगया। दूसरे वाक्यों में भी इसी प्रकार के परिवर्तन हुए हैं। तीसरे वाक्य के 'मास्टरजी' बदल कर 'मास्टरजी द्वारा' हो गये और 'विद्यार्थियों को' बदल कर विद्यार्थी हो गया है।

अभ्यास १६

नीचे लिखे वाक्यों से दूसरे प्रकार के वाक्य बनाओः—

क

१. दो टीमें क्रिकेट का मैच खेल रही हैं। २. वह भोजन कर रहा है। ३. मिस्त्री मकान बना रहा है। ४. राजपूत सेना ने युद्ध जीत लिया। ५. सेनापति ने झण्डा फहराया। ६. लड़कीने गुड़िया बनाई। ७. माता ने पुत्री को बुलाया। ८. ड्राइवर मोटर चलाता है।

ख

१. पानी नलके से भरा गया।

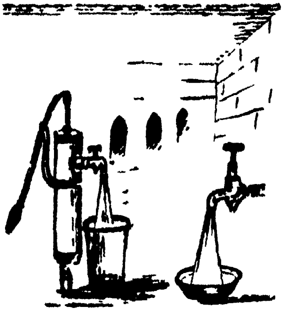
२. पानी दो गैसों से बनाया गया

३. सेना हराई गई।

४. घोड़ों से पानी पिया गया।

५. मुझसे धोती पहनी गई।

६. गार्ड से सीटी बजाई गई।



पहेलियां

नीचे कुछ पहेलियां दी गई हैं। उनका उत्तर बताओ—

१ एक जानवर असली, जिसकी हड्डी न पसली।

२ वाह रे सांई तेरा काम, ऊपर हड्डी भीतर चाम।

३ एक अचरज की है कल जिसमें अग्नि और न जल।

४ सबके हाथ सबके साथ निशदिन रहे सबके पास।

५ चौकी पर बैठी तुलसीरानी, सिर पर आग बदन पर पानी।

६ एक जानवर ऐसा जिसके दुम पर पैसा।*

अध्यापकों को चाहिये कि वे अन्य भी बहुत सी मनोरंजक पहेलियां विद्यार्थियों को सुनावें और उनसे उनके उत्तर मांगें।

* उत्तर—(१) जूं (२) कछुआ, (३) हाथ (४) दीपक (५) मोर

कहानी—१

प्यारे बालको, अब तुम वाक्य लिखना सीख गये हो, लिखने में होने वाली अक्सर अशुद्धियों से भी तुम वाकिफ़ हो गये हो, अपूर्ण वाक्य को पूर्ण करना भी तुम जान गये हो, विरामों के सम्बन्ध में भी तुम्हारी थोड़ी बहुत जानकारी हो गई है, छोटे छोटे वाक्यों को मिलाने के अलावा शब्दसम्बन्धी अन्य अनेक उपयोगी बातें भी अब तुम पढ़ चुके हो। अब हम एक नयी बात बतायेंगे। तुम्हें कहानी ज़रूर अच्छी लगती होगी। तुम अपने घर में अपने माता पिता या भाई बहनों से कहानियां सुनते रहते होगे और किताबों में भी बड़े दिल से कहानियां पढ़ते होगे। अब हम तुम्हें कहानी लिखना ही सिखायेंगे। क्यों? सीखोगे न? मुझे विश्वास है कि सीख लोगे। तो फिर पढ़िये:—

अंगूर खट्टे हैं

एक लोमड़ी को भूख लगी। वह एक कुंज में पहुंची, जहां अंगूर की बेलें थीं। वह अंगूर खाने के लिए

बहुत कूदी, लेकिन अंगूर उसकी पहुंच से बहुत ऊंचे थे। तब वह कहने लगी कि अंगूर खट्टे हैं। मैं इन्हें खाना भी नहीं चाहती।

(विद्यार्थी कहानी लिखना प्रारम्भ करें, इसके पहले उन्हें कहानी को मौखिक रूप से सुनाने का अभ्यास करा देना चाहिये। इसके लिये—

१. अध्यापक स्वयं एक कहानी विद्यार्थियों को सुनावे।

२. एक विद्यार्थी वही कहानी पढ़कर सबको सुनावे।

३. अध्यापक उस कहानी पर प्रश्न करे और विद्यार्थियों से उसका उत्तर मांगे। विद्यार्थी पूर्ण वाक्यों में उसका उत्तर दें।

उपर्युक्त कथा पर निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिएं।)

प्रश्न

(१) लोमड़ी भूख लगने पर कहां गई ?

(२) वहां क्या चीज़ थी ?

(३) अंगूर लेने के लिये उसने क्या किया ?

(४) अंगूर उसे क्यों नहीं मिले ?

(५) तब उसने क्या कहा ?

लालची कुत्ता

एक कुत्ता मुंह में रोटी का टुकड़ा लिये एक नाले के किनारे जा रहा था। पानी में उसने अपनी परछाहीं देखी। मूर्ख कुत्ते ने समझा कि पानी में एक और कुत्ता है और उसके मुंह में भी रोटी है। लालची कुत्ते ने उसकी रोटी भी छीननी चाही। उसने वह रोटी लेने के लिए ज्योंहीं मुंह खोला, उसकी अपनी रोटी भी पानी में गिर गई। सच है, लालच बुरी बला है।

प्रश्न

(१) कुत्ता मुंह में क्या लिये, कहां जा रहा था ?

(२) उसने पानी में क्या देखा ?

(३) परछांही देखकर उसके दिल में क्या ख्याल पैदा हुआ ?

(४) उसके मुंह की रोटी कैसे गिरी ?

दो बिल्लियां और बन्दर

दो बिल्लियों को एक रोटी मिली। रोटी कैसे बांटें, इस पर दोनों में झगड़ा हो गया। झगड़ते झगड़ते अन्त में दोनों ने यह निश्चय किया कि फ़ैसले के लिए बन्दर के पास चला जाय। वे दोनों बन्दर के पास गईं। बन्दर ने रोटी के दो टुकड़े तराजू के पलड़ों में रखकर तोलना शुरू किया। जो पलड़ा भारी होता, उसमें से वह एक ग्रास खा जाता, तब दूसरा पलड़ा भारी हो जाता और उसमें से एक ग्रास खा लेता। तब पहला पलड़ा भारी हो जाता और वह उसमें से कुछ खा लेता। इस तरह करते करते वह सारी रोटी खा गया। बिल्लियां पछताईं और और मुंह ताकती हुईं अपने घर चली गईं।

प्रश्न

(१) दो बिल्लियों को क्या मिला ?

(२) वे फिर क्या करने लगीं ?

(३) आपसी झगड़े को निबटाने के लिये उन्होंने क्या किया ?

(४) बन्दर ने क्या चालाकी की ?

(५) तब बिल्लियों ने क्या अनुभव किया ?

जैसे को तैसा

एक व्यापारी एक गधे और एक घोड़े पर माल लेकर कहीं जा रहा था। गधे पर दो मन नमक था और घोड़े पर एक मन कपास। गधा दो मन भार से चकनाचूर हो रहा था। उसने घोड़े से कहा कि भाई, थोड़ा सा मेरा बोझ ले लो, मैं बहुत थक गया हूं। लेकिन घोड़ा स्वार्थी था। उसने गधे की बात न मानी। थोड़ी दूर चलते २ रास्ते में बहुत सा पानी आ गया और दोनों उसमें से होकर चलने लगे। गधे का नमक घुलते घुलते थोड़ा हो गया और घोड़े की कपास भीग जाने के कारण बहुत भारी हो गई। अब घोड़ा भी हांफने लगा और गधे से विनती की कि मेरा भार हलका कर। गधे ने कहा—पहले मेरी बात मानी थी? इसी को कहते हैं जैसे को तैसा

प्रश्न

(१) व्यापारी किन पशुओं पर क्या २ लादे जा रहा था?

(२) गधा क्यों थक रहा था?

(३) गधे ने घोड़े से क्या कहा और घोड़े ने क्या जवाब दिया ?

(४) गधेका भार हलका और घोड़े का भार भारी कैसे हुआ ?

(५) घोड़े ने गधे से क्या कहा और गधे ने क्या जवाब दिया ?

आलसी प्रजा और राजा

एक राजा अपनी प्रजा को आलसी देखकर बहुत दुःखी था। एक दिन उसने अपनी प्रजा को शिक्षा देने के लिये रात के समय बाजार में एक बड़ा सा पत्थर रखवा दिया। लोगों को इससे आने जाने में बड़ी तकलीफ होती। लेकिन वे आलसी इतने अधिक थे कि कोई पत्थर को हटाने की मिहनत न करता था। सभी सरकार की निन्दा करते कि वह पत्थर नहीं हटाती। इस तरह से पत्थर को रास्ते में पड़े हुए बहुत दिन हो गये। तब राजा ने वह पत्थर सबके सामने उठवाया। उसके नीचे एक लोहे की सन्दूकची थी। उस पर लिखा था कि पत्थर हटाने वाले का इनाम। उस सन्दूकची में बहुत से रुपये थे। यह देखकर लोग बहुत शरमिन्दा हुए।

प्रश्न

(१) राजा किस लिए दुःखी था ?

(२) प्रजा को पाठ पढ़ाने के लिये उसने क्या किया ?

(३) लोग रास्ते में पत्थर देखकर क्या कहते और क्यों न उठाते ?

(४) तब राजा ने क्या किया ?

(५) उस पत्थर के नीचे क्या था और लोगों ने उसे देखकर क्या अनुभव किया ?

खरगोश की बुद्धिमत्ता

एक जङ्गल में एक भयानक शेर रहता था। वह जङ्गल के पशुओं को बारी बारी से खाया करता था। जिस पशु की बारी होती थी, वह स्वयं उसके पास पहुंचता था। एक दिन एक खरगोश की बारी आई। वह रास्ते में कोई ऐसी तरकीब सोचने लगा कि जिससे वह न मारा जावे और शेर खुद मर जाय। वह बहुत आहिस्ता आहिस्ता चलने लगा और बहुत देर करके शेर के पास पहुंचा। शेर भूख से व्याकुल और क्रुद्ध हो रहा था। लेकिन खरगोश भी कम चालाक न था। वह जाते ही हाथ जोड़

कर बोला कि रास्ते में आपका दुश्मन एक और शेर मिला था । उसने मेरे साथियों को पकड़ लिया और मुझे भी मारना चाहा । मैं किसी तरह भाग आया । शेर ने कहा कि चलो, पहले उसे मार लूं, फिर तेरा भोजन करूंगा । वह कहां है ? खरगोश उसे एक कुएं के पास ले गया । शेर ने अन्दर झांका और अपनी परछाई को दूसरा शेर समझा । शेर दहाड़ा, तो अन्दर से भी उसे दहाड़ने की गूंज सुनाई दी । तब उसे विश्वास हो गया कि अन्दर एक दूसरा शेर है । वह उसे मारने के लिये कुंए में कूद पड़ा और स्वयं मर गया । खरगोश खुश होता हुआ वापस आगया ।

प्रश्न

(१) शेर जङ्गल में क्या किया करता था ?

(२) पशु उसके पास किस नियम से पहुंचते थे ?

(३) खरगोश ने रास्ते में जाते जाते क्या सोचा ?

(४) उसने वहां जाकर शेर को क्या कहा ?

(५) शेर को वह कहां ले गया ?

(६) शेर ने कुंए में देखकर क्या समझा ?

(७) शेर किस तरह मरा ?

यहां नीचे कुछ कहानियां दी जाती हैं। विद्यार्थी एक बार उन्हें पढ़ लें। फिर अध्यापक स्वयं उपर्युक्त विधि के अनुसार प्रश्न कर विद्यार्थियों से दुहरावें।

लोभी बाघ

किसी बाघ ने झाड़ी में सोते हुए एक खरगोश को देखा। वह उसे पकड़ने ही वाला था कि उसकी नज़र एक बारहसिंगा पर पड़ी। तब वह खरहे को छोड़ उसे पकड़ने दौड़ा। लेकिन बारहसिंगा बहुत तेज़ दौड़कर कहीं छिप गया। तब निराश होकर बाघ खरहे को ही पकड़ने वापस आया। लेकिन खरहा भी उस समय तक एक और जगह छिप गया था। अब तो बाघ बड़ा पछताया। बड़े शिकार का लोभ किया, छोटा भी न मिला।

हाथी और गीदड़

किसी जंगल में एक हाथी रहता था। उसी में

बहुत से गीदड़ भी रहते थे। गीदड़ हाथी का मांस खाना चाहते थे, लेकिन उसके डील डौल और उसकी ताकत से सब डरते भी थे। उसे कैसे पकड़ें, यह उन्हें न सूझता था। एक चालाक गीदड़ हाथी के पास गया और कहने लगा—इस जंगल के सब पशु आप के डील डौल और ताकत पर प्रसन्न हैं। इसलिये वे आपको राजा बनाना चाहते हैं। आपको उन्होंने इसलिये बुलाया भी है। हाथी बड़ा खुश हुआ। वह गीदड़ के पीछे पीछे चलने लगा। आगे दल-दल था। गीदड़ तो उसमें से निकल गया, लेकिन हाथी बहुत भारी था, इस लिये उसमें फंस गया। तब सब गीदड़ों ने उसे नोचना काटना शुरू कर दिया। बेचारा हाथी कुछ न कर सका और छटपटा कर मर गया। तब तो गीदड़ों ने बहुत दिन तक उसका मांस खाया।

राजा रामचन्द्र

आज से बहुत समय पहले भारतवर्ष में राजा दशरथ राज्य करते थे। वे जब वृद्ध हुए, उन्होंने अपने पुत्र राम-चन्द्र को राज्य देकर अपनी शेष आयु ईश्वर-भजन में

बिताने का निश्चय किया। रामचन्द्र बहुत ही समझदार बहुत ही बहादुर और बहुत ही नेक थे। सब लोग उन्हें बहुत चाहते थे। उनका राजगद्दी पर बिठाने की तय्यारियां होने लगीं। लेकिन दशरथ की एक रानी कैकेयी को राम का राजा बनना पसन्द न था। वह अपने पुत्र भरत को गद्दी पर बिठाना चाहती थी। राजा दशरथ ने उसकी बात मान कर रामचन्द्र को चौदह बरस जंगल में जाकर बिताने की आज्ञा दी। रामचन्द्र के भाई लच्मण और पत्नी सीता भी उनके साथ जंगल में गईं।

उन्हें जंगल में रहते रहते कई बरस हो गये। वे घूमते फिरते एक दिन पञ्चवटी पहुंचे। वह जगह इनको बहुत भाई और वे वहीं रहने लगे। एक दिन दोनों भाई शिकार खेलने गये, उनके पीछे लंका का राजा रावण कुटी पर पहुंचा और सीताजी को चुरा ले गया।

जब दोनों भाइयों ने आकर कुटी खाली देखी, तो घबराकर इधर उधर भटकने लगे। एक दिन उनकी भेंट किष्किन्धा के राजा सुग्रीव से हुई। उसके मन्त्री हनुमान ने सीताजी का पता लगा लिया। तब राम ने सुग्रीव की

सेना की सहायता से रावण पर चढ़ाई की और उसे मार कर वे सीताजी को वापिस लाये। अब तक चौदह बरस भी पूरे हो चुके थे, इसलिये वे अयोध्या लौट आये और राज करने लगे।

अध्यापक को चाहिए कि इन के अलावा रीडर की कहानियों को भी प्रश्नों द्वारा दुहराये।

प्रश्न

(१) राजा दशरथ बहुत समय पहले क्या करते थे ?

(२) उन्हों ने वृद्ध होने पर क्या विचार किया ?

(३) उनके पुत्र रामचन्द्र कैसे थे ?

(४) उन्हें राज्य क्यों नहीं मिला ?

(५) वे जंगल में क्यों गये और उनके साथ कौन कौन गये ?

(६) वे पञ्चवटी में क्यों रहने लगे ?

(७) सीता को कौन चुरा ले गया ?

(८) रामचन्द्र ने किस की सहायता ली ?

(९) सीता का किसने पता लगाया ?

(१०) रावण कैसे मारा गया ?

(११) अयोध्या लौट कर वे क्या करने लगे ?

कहानी—२

कहानी के संकेत

कहानी को एक और प्रकार से भी लिखा जा सकता है।

(१) अध्यापक एक बार सब विद्यार्थियों को कहानी सुनादे।

(२) इसके बाद विद्यार्थियों को उस कहानी के मुख्य संकेत कापियों के ऊपर लिखा दे या श्यामपट्ट पर स्वयं लिख दे।

(३) अब वह विद्यार्थियों से कहे कि उन संकेतों की सहायता से कहानी याद करके लिखें।

पहले दी हुई कहानियों में से दो तीन कहानियों के संकेत नीचे लिखे जाते हैं।

दो बिल्लियां और बन्दर

दो बिल्लियों को एक रोटी मिलना—बांटने के सवाल पर झगड़ा—फैसले के लिए बन्दर के पास आना—बन्दर का तराज़ू पर रोटी तोलना—जो पलड़ा भारी दीखे उसमें से कुछ खा जाना—बारी २

करके सारी रोटी हजम करना—बिल्लियों का पछताना और घर जाना।

जैसे को तैसा

व्यापारी का गधे व घोड़े पर माल लादकर लेजाना—गधे पर दो मन नमक और घोड़े पर १ मन कपास—गधेकी घोड़ेसे भार हलका करने की विनती—घोड़े का इन्कार—पानीमें से दोनों का गुजरना—नमक का घुलना और कपास का भारी होना—घोड़े की गधे से विनती—गधे का कोरा जवाब।

आलसी प्रजा और राजा

प्रजा के आलस्य से राजा का दुःखी होना—शिक्षा देने के लिए रात को बाजार में एक बड़ा पत्थर रखवाना—लोगों को सख्त तकलीफ़—लेकिन आलस्यवश कोई पत्थर न उठावे—सब का सरकार की निन्दा करना कि वह पत्थर क्यों नहीं उठाती—पत्थर पड़े हुए बहुत दिन बीत गए—राजा का स्वयं सबके सामने पत्थर उठाना—नीचे एक लोहे की सन्दूकड़ी—पत्थर उठानेवाले के लिए सन्दूकड़ी में बहुत से रुपये, यह लिखा हुआ—लोगों का शरमिन्दा होना।

खरगोश की बुद्धिमत्ता

जङ्गल में एक भयानक शेर का रहना—क्रमशः जङ्गली पशुओं को खाना—एक दिन खरगोशकी बारी—शेर को मारनेकी तरकीब

सोचना—देर से शेर के पास पहुँचना—शेर का क्रोध—खरगोश की चालाकी—शेर को उसके दुश्मन की झूठी कथा कहना—शेरको कुएं पर लेजाना—शेरका अपनी परछाईको दूसरा शेर और अपनी प्रतिध्वनि को उसकी आवाज़ समझना—उसे मारने के लिए कुएं में कूदना और मर जाना ।

राजा रामचन्द्र

बहुत समय पहले राजा दशरथ का राज करना—वृद्ध होने पर रामको गद्दी देने और स्वयं ईश्वरभजन करने का निश्चय—रामचन्द्र का सर्वप्रिय होना—राजतिलक की तैयारियां—राम को बनवास और उसकी जगह अपने पुत्र भरत को गद्दी दिलाने की कैकेई की इच्छा—दशरथका वैसा करना—रामका वन जाना—उसकी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण का भी साथ जाना—कई सालों तक जंगल में घूमना फिरना—फिर पञ्चवटीको पसन्द करना और वहां रहना—एक दिन भाइयों का शिकार खेलने जाना—रावण का आ कर सीता को चुराना—दोनों भाइयों का कुटी में सीता को न देख कर घबराना और खोजना—सुग्रीव की सहायता मिलना—हनुमान का सीता को पता लगाना—रावण से लड़ाई और उसे मारना—सीता को लेकर घर आना और राज करना ।

पन्ना का त्याग

महाराजा विक्रमादित्य उदयपुर में राज करते थे। बनवीर उनका दीवान था। वह स्वयं राजा बनना चाहता था। उसने एक दिन महाराजा को मार दिया। लेकिन अभी वह राजा नहीं बन सकता था, क्योंकि महाराजा का राजकुमार उदयसिंह अभी जीवित था। उसने अपने रास्ते के इस कांटे को भी साफ़ करना चाहा। इसकी खबर राजकुमार को पालने वाली पन्ना धाय को लग गई। उसने छोटे राजकुमार को टोकरी में सुलाकर बाहर निकाल दिया। थोड़ी देर बाद बनवीर हाथ में तलवार लेकर राजमहल में पहुँचा और उससे पूछा कि---उदयसिंह कहां है? स्वामि-भक्त पन्ना धाय ने सोते हुए अपने पुत्र की ओर अंगुली उठाई। उसने उसे मार डाला। अपने पुत्र के मारे जाने पर पन्ना महलों से निकल गई और छिप कर उदयसिंह का पालन करने लगी।

प्रश्न

(१) महाराजा विक्रमादित्य कौन थे?

(२) उनका दीवान कौन था ?

(३) दीवान के दिल में क्या ख़याल आया ?

(४) उसने राजा बनने के लिए क्या किया ?

(५) पन्ना धाय ने राजकुमार को कैसे बचाया ?

संकेत

महाराजा विक्रमादित्य का उदयपुर में राज करना—उसका दीवान बनवीर—दीवान की स्वयं राजा बनने की इच्छा—महाराजा की हत्या–राजकुमार को मार कर मार्ग निष्कण्टक करने की इच्छा–पन्ना धाय को ख़बर—उदयसिंह को टोकरी में छिपा कर बाहर करना—बनवीर का तलवार लेकर महल में आना—बनवीर का राजकुमार को पूछना–अपने सोते हुए पुत्र की ओर पन्ना का संकेत–बनवीर का तलवार से मारना–पन्ना का महलों से छिपकर निकलना और उदयसिंह का पालन।

राबर्ट ब्रूस

स्काटलैण्ड का राजा राबर्ट ब्रूस कई बार लड़ाई में हार चुका था। अब उसमें हिम्मत न रही थी। वह निराश होकर एक जंगल में जा बैठा। उसने उसी समय देखा कि एक मकड़ी एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूद कर जाना चाहती है। वह कई बार कूदी। उसे काम-

याबी न होती थी, लेकिन उसने हिम्मत न छोड़ी और न निराश हुई। आखिर एक बार वह सफल हो गई। मकड़ी की यह उद्योगशीलता देख कर राबर्ट ब्रूस भी उठ बैठा। उसने फिर हिम्मत बांधी और फौज़ लेकर दुश्मन पर हमला कर दिया। इस बार वह जीत गया।

प्रश्न

(१) राबर्ट ब्रूस कौन था ?
(२) वह हिम्मतपस्त और निराश क्यों हो गया ?
(३) उसने जङ्गल में क्या देखा ?
(४) मकड़ी अपने काम में कैसे कामयाब हुई ?
(५) राबर्ट ब्रूस ने उससे क्या शिक्षा ली ?
(६) फिर उसने क्या किया ?

संकेत

राबर्ट ब्रूस का कई बार हार कर हिम्मत छोड़ना-निराश होकर जंगल में जाना-मकड़ी को देखना-मकड़ी का कूदना और बार बार गिर जाना-फिर कूदना फिर कूदना-आखिर कामयाब होना-ब्रूस के दिल में उत्साह—फौज लेकर दुश्मन पर चढ़ाई और जीतना।

निम्नलिखित कहानियों के प्रश्न और संकेत स्वयं बनाकर अध्यापक विद्यार्थियों से लिखावें।

शेर और चूहा

एक शेर अपनी गुफा में सोया हुआ था। वहीं बिल में से एक चूहा निकला और शेर पर कूदने लगा। इससे शेर की नींद खुल गई। शेर क्रुद्ध होकर उसे मारने लगा। चूहे ने उसे कहा कि आज मुझे माफ़ कर दो, मैं भी कभी तुम्हारी सहायता करूंगा। शेर ने उसे छोड़ दिया। कुछ दिन बाद उस शेर को शिकारी ने पकड़ लिया। उस चूहे ने शेर को बंधा हुआ देखा और जाल को काट दिया। शेर स्वतन्त्र होकर भाग गया।

एक रुपये से दूकान

एक गरीब लड़के ने बाबू ईश्वरचन्द्र से एक पैसा मांगा। ईश्वरचन्द्र ने कहा—यदि मैं चार पैसे दूं, तो तू क्या करेगा? लडके ने उत्तर दिया कि दो पैसे का आटा मोल लूंगा और दो पैसे मां को दूंगा। ईश्वर-चन्द्र ने फिर कहा कि यदि चार आने दूं, तो क्या

करेगा ? उस बालक ने जवाब दिया कि खाने के लिए दो आने के चावल लूंगा और बाकी दो आने के आम खरीद कर बेचूंगा। ऐसा करने से एक आना मुझे मिल जायगा। ईश्वरचन्द्र ने उसे एक रुपया दे दिया। उस बालक ने चौदह आने के आम खरीदे और



कुछ ज्यादा में बेच दिये। दूसरे दिन उसने और अधिक आम खरीदे और उन्हें बेच कर ज्यादा फ़ायदा उठाया। इस तरह कुछ दिनों बाद उसने छोटीसी दुकान खोलली। इस दुकान को बढ़ाते बढ़ाते वह कई सालों के बाद बहुत रुपया कमाने लगा।

अभ्यास १७

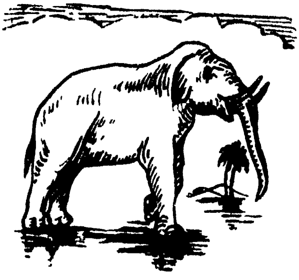
नीचे कुछ संकेत दिये हैं। उनको देखते हुए कहानियां लिखो—

फ़कीर का लालच

एक बहुत गरीब फ़कीर—पैसे की तलाश में भ्रमण—रास्ते में राजा का मिलना—राजा ने कहा कि तुम्हारी जेब मोहरों से भर दूंगा—फ़कीर का खुश होना—लेकिन इतनी लेना कि जिससे जेब न फटे, अगर जेब से एक भी मोहर गिरी तो एक भी मोहर न मिलेगी—फ़कीर का जेब में मोहरें भरना—राजा का कहना कि जेब फट रही है—फ़कीर का लालच में परवा न करना—और मोहरें भरना—राजा का फिर कहना—फ़कीर का न मानना—और मोहरें डालना—राजा की दो तीन बार चेतावनी—उसका न सुनना और अन्त में जेब फट गई—एक भी मोहर न मिली—फ़कीर का पछताना।

हाथी का बदला

एक हाथी का रोज़ पानी पीने जाना—रास्ते में दरजी की दुकान—रोज़ वहां से गुज़रना—दरजी की दुकान में खिड़की से सूँड़ का डालना—दरजी का रोटी देना—एक दिन दरजी की शरारत—रोटी के बदले सुई चुभो दी—हाथी चुपचाप चला गया—वापिस



आते समय सूंड में मैला पानी भर लाना—खिड़की में से मैला पानी फैंकना—दरजी के सब कपड़े खराब—दरजीका पछताना ।

कबूतरों की रक्षा

एक जंगल में एक वृक्ष पर कबूतरों का जोड़ा—शिकारी का वहां पहुँचना—पेड़ पर घोंसला देखकर ठहरना—दूसरी ओर बाज का आना और कबूतर को मारने की फिक्र—कबूतर का दोनों ओर से विपत्ति देखकर डरना—कबूतरी का धैर्य देना कि दयालु ईश्वर पर विश्वास रखो—शिकारी का कबूतरों को निशाना बनाने की तैयारी—इतने में एक सांप का वहीं बिल में से निकलना—शिकारी को डस लेना—तीर का छूट कर बाज़ को लगना—बाज़ और शिकारी दोनों की मृत्यु—कबूतरी का ईश्वर को धन्यवाद ।

दो बकरियां

दो बुद्धिमती बकरियां—उनका एक नाले को पार करना—नाले के ऊपर पुल का तङ्ग होना—दोनों बकरियों की पुल पर भेंट—पुल के तङ्ग होने के कारण उनका लौटना असम्भव—एक का पुल पर लेट जाना और दूसरी का उस पर से गुज़र जाना—फिर पहिली का भी पार कर लेना ।

महात्मा बुद्ध और एक माता

एक बालक की मृत्यु—उसकी मां का उसे लेकर म० बुद्ध के पास जाना—कोई ऐसी दवा मांगना, जिससे बच्चा जी उठे—बुद्ध का उसे कहना कि एक ऐसे घर से कपड़ा लाओ, जहां कभी कोई न मरा हो—उस स्त्री का बहुत से घरों में जाना—लेकिन कोई घर ऐसा न मिलना, जहां कोई न मरा हो—सारे संसार की एक सी दशा समझना और उसका शान्त होना।

अभ्यास १८

नीचे कुछ कहानियां दी गई हैं। उनके प्रश्न लिखो। ऐसा करने से पहले कहानी खूब ग़ौर से पढ़ लो। कहानी की एक एक बात ख़्याल में रखो। ऐसा कोई प्रश्न छूट न जाय, जिसके उत्तर के बिना कहानी अधूरी रह जाय।

वृद्धा स्त्री और डाक्टर

एक बूढ़ी औरत अन्धी हो गई। उसने एक मशहूर डाक्टर को बुलाया और कहा कि यदि तुम मुझे अच्छा कर दोगे, तो मैं तुम्हें खूब इनाम दूंगी। लेकिन अगर मैं अच्छी न हुई तो मैं एक पैसा भी न दूंगी। डाक्टर भी इससे सहमत हो गया। डाक्टर रोज वृद्धा के घर आने लगा। वृद्धा के घर पर बहुत सुन्दर व कीमती लकड़ी का सामान था। डाक्टर का दिल उसे देखकर लल-

चाया। वह रोज़ एक एक लकड़ी की वस्तु ले जाने लगा। बूढ़ी अन्धी थी, देख न सकती थी। मैं सारा माल चुरा ले जा सकूं, इस आशा से डाक्टर ने इलाज में ढील कर दी। जब सारा लकड़ी का सामान वह चुरा ले गया, तो उसने बूढ़ी की आंखों को भी ठीक कर दिया। उसने बूढ़ीसे इनाम मांगा। वृद्धाने इनकार कर दिया। डाक्टर ने कई वार तकाज़ा किया, लेकिन वह सदा इनकार ही करती रही। आख़िर लाचार होकर डाक्टर ने अदालत में मुकद्दमा चला दिया। वहां जज ने वृद्धा से पूछा कि तुम क्यों नहीं देती? उसने तुम्हारी आंखें ठीक कर दी हैं। वृद्धा ने जवाब दिया कि मेरी आंखें ठीक नहीं हुईं। मेरे घर में बहुत सा लकड़ी का सामान था, वह मुझे अभी तक नहीं दीखता। जज ने यह सुनकर उस बूढ़ी के हक़ में फ़ैसला दिया।

बादशाह एडवर्ड और बुढ़िया

आज से २७–२८ साल पहिले इंगलैंड में एडवर्ड बादशाह राज करते थे। राजगद्दी पर बैठने से पहले वे गरीब लोगों के पास प्रायः जाते और उनसे उनके हालचाल पूछते। एक दिन उन्हें रास्ते में एक गरीब बुढ़िया मिली। उसने सिर पर बोझा उठाया हुआ था। लोगों का माल एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना उसका पेशा था। इसी से वह गुज़र करती थी। वह बुढ़िया कमजोर थी, बहुत भार उठा नहीं सकती थी। उस समय

भी बहुत कठिनाई से चल रही थी। बुढ़िया की यह हालत देख कर एडवर्ड को दया आ गई। उन्होंने बुढ़िया से कहा–इतना बोझ न उठाया करो, तुम कमज़ोर हो। बुढ़िया बोली—"क्या करूं बोझ न उठाऊं तो रोटी कहां से खाऊं? मेरा बेटा मर गया है, मुझे खुद ही मेहनत करनी पड़ती है।" उस समय तो बुढ़िया की यह बात सुनकर एडवर्ड चले गये, लेकिन दूसरे दिन उसके पास एक गाड़ी भिजवा दी। उस गाड़ी के आने से बुढ़िया को बहुत आनाम मिज़ गया।

योग्य विद्यार्थी इन कहानियों के संकेत भी लिख सकते हैं। लेकिन ऐसा करते हुए वे इस बात का खयाल ज़रूर रखेंगे कि कोई ऐसा संकेत रह न जाय, जिसके निर्देश के विना कहानी अधूरी रह जाय।

पद्य कहानियां

बढ़ई रख कर तख्ता भारी
चीर रहा था लेकर आरी।
करते करते अपना काम
उसको वहां होगई शाम॥
छोड़ इसलिए तख्ता योंही
गया गांव को बढ़ई त्योंही।

बन्दर एक वहां पर आया
लख कर तख़्ते को हर्षाया ॥
बन्दर होते ही हैं नटखट
बस फिर क्या था झटपट ।
सोचा मन अच्छा खासा
करनेको यों मिला तमाशा ॥
लगी हुई तख़्तों के बीच
लिया उसने कील को खींच ।
फंस कर तख़्तों में भरपूर
पैर हो गया चकनाचूर ॥
भूलो नटखटपन की बान
तुरन्त खो दिये उसने प्रान ॥

यह कथा पद्यों में लिखी गई है । इसे अपनी भाषा में लिखा जा सकता है । देखिये—

एक बढ़ई आरी लेकर भारी तख़्ता चीर रहा था । अपना काम करते करते उसको वहां शाम हो गई । इस लिए यों ही तख़्ता छोड़ कर वह गांव को चला गया । थोड़ी देर में वहां एक बन्दर आया और तख़्तों को देख

बहुत बुरा हुआ। बन्दर नटखट होते ही हैं। उसने भी मन में सोचा कि यह तो एक अच्छा खासा तमाशा करने को मिला है। उसने तख्तों के बीच लगी हुई कील को खींच लिया। उसका पैर तख्तों में बुरी तरह फंस कर चकनाचूर हो गया। बन्दर की नटखटपन की आदत भूल गई और उसने तुरत प्राण खोदिये।

अभ्यास १६

निम्नलिखित पद्यों में लिखी कथाओं को अपनी भाषा में लिखो—

ईश्वर की भूल

किसी काम से कहीं जा रहे थे कल्लू सरदार।
रखा झुकी पीठ के ऊपर था गठरी का भार॥
गरमी कड़ी तेज सिर पर थी, पड़ती उनके धूप।
भूख प्यास से बिगड़ गया था, उनका भद्र स्वरूप॥
छांह घनी बरगद की पायी, ठहर गये चुपचाप।
करने को आराम पड़ रहे, आंख मूंद कर आप॥
हुई तरावट जब दिमाग़ में, कहा खूब कर ग़ौर।
बरगद ही सचमुच होता है, पेड़ों का सिरमौर॥
लेकिन बड़ी भूल ईश्वर ने, की है इस में यार।
इतने छोटे से फल की थी, भला कौन दरकार?

नरम बेल में तरबूज़ों का, बोलो क्या था काम ?
इस बेअक़्ली को न आजतक क्योंकर हुआ ज़ुकाम ?
इसी सोच में पड़े हुए थे, जब कल्लू सरदार।
सिर पर हुआ एक त्यों ही, बरगद के फलका वार॥
चौंक पड़े, बोले"—भारी की ग़लती मैंने आज।
बिलकुल गड़बड़ से खाली है. उस ईश्वर का राज॥
मन भरका अगर कहीं यह फल होता तो फिर आज।
पता न रहता इस शरीर का, होता बड़ा अकाज॥"

सच्चा साथी

किसी घने जंगल में बच्चो ! एक शेर रहता था।
भोजन करके एक दिवस वह, अपने घर सोता था॥
खाता हुआ हवा इक चूहा, तभी शेर ढिग आया।
लगा काटने मूछें सिंह की, नहीं ज़रा घबराया॥ १॥
एकाएक अचानक उसकी, नींद खुली जब भाई !
पकड़ी गर्दन शेर ने उसकी, मौत सामने आई॥
चूहे ने तब कहा शेर से, तजो मुझे पंजे से।
नहीं भरेगा पेट आपका, मुझ छोटे प्राणी से॥ २॥
सुन चूहे की विनय शेर को, दया तुरत हो आई।
छोड़ तभी पंजे से उसको, बोला, जाओ भाई॥
मूस मुक्त हो बन्धन से तब, बोला—भाई जाऊं।
मौका आने पर, शायद फिर, मैं भी तुम्हें बचाऊं॥३॥

सुन चूहे की बातें सिंह को, गर्व हुआ बहुतेरा।
छोटा सा यह जीव विचारा, क्या कर सकता मेरा?
एक बार वह शेर घमण्डी फंसा जाल में ऐसा।
चिल्लाया तब खूब जोर से, हुआ दैव यह कैसा ॥४॥
चिल्लाहट सुन वही मूस तब, वहां समय पर आया।
छिन में जाल काट उसने फिर, सिंह को खूब बचाया ॥
धन्यवाद दे तभी ईश को, बोला सिंह चूहे से।
"नहीं उऋण हो सकता भाई, तेरी इस नेकी से ॥५॥
चूहा बोला नहीं मित्र यह, काम उसी ईश्वर का।
दुनिया के सारे जीवों पर, हक़ उस परमेश्वर का ॥
प्यारे बच्चो, तुम भी हरदम, ध्यान धरो ईश्वर का।
'सच्चे साथी' बनो देश हित, मोह तजो 'लदर्मा' का ॥६॥

चित्र-कथा

छोटे बच्चे चित्रों को बहुत पसन्द करते हैं। वे चित्र को देख कर यह समझने की कोशिश स्वयं करते हैं कि उसमें क्या क्या दिखाया गया है? वे चित्र को समझने में भी उत्साह प्रकट करते हैं। उनके इस उत्साह का लाभ अध्यापक कहानी सिखाने में भी उठा सकते हैं। इससे बच्चों की कल्पनाशक्ति का भी विकास होता है। नीचे चार चित्र दिये जाते हैं। अध्यापक विद्यार्थियों से एक एक चित्र

दिखा कर पूछे कि इसमें क्या दिखाया गया है। प्रत्येक बालक अध्यापक को इस बात का जवाब देगा। फिर अध्यापक उन्हें कापी पर भी वही लिखने के लिये कहे। इस तरह बालक चित्रोंकी सहायतासे एक कहानी लिख लेगा।

१ २



प्रथम चित्र—दो विद्यार्थी नदी तट की ओर घूमने जारहे है। एक विद्यार्थी कुछ कदम आगे है। नदी तट पर तीन वृक्ष भी हैं।

द्वितीय चित्र—दोनों विद्यार्थी नदी के किनारे पहुंच गये। वहां वे देखते हैं कि कुछ लोग किश्ती पर सवार हैं और एक मल्लाह किश्ती खेरहा है।

तृतीय चित्र—उन दो में से एक विद्यार्थी पानी में स्नान करते समय डूब रहा है। यह देखकर उसका साथी पानी में कूद पड़ा।

चतुर्थ चित्र—डूबते हुए साथी को दूसरा विद्यार्थी निकाल कर किनारे पर ले जारहा है।

अध्यापक को चाहिये कि विभिन्न चित्र दिखाकर विद्यार्थियों से पूछें कि चित्र में क्या देखते हो। चित्र की एक एक बात को विद्यार्थी सूक्ष्मता से देखेंगे। इससे उनकी निरीक्षण शक्ति का भी विकास होगा।

अभ्यास २०

कुछ ऐसी कहानियां लिखो जिन से निम्न शिक्षाएं मिलती हों—

(१) झूठ बोलना बुरा है। (२) लालच बुरी बला है। (३) किसी को तंग न करना चाहिए (हाथी और दर्जी की कहानी)

लेख

मैं उन दिनों तीसरी श्रेणी में था। मेरे अध्यापक ने कहा—प्यारे अशोक, आज अपनी पाठशाला पर एक छोटा सा लेख लिखो। मैं उनकी यह आज्ञा सुनकर बहुत घबराया और सोचता रहा कि क्या लिखूं ? जब आध घण्टा हो गया, अध्यापक ने मुझे लेख लिखने के लिये कहा। मैं घबराया, मैंने तो एक भी पंक्ति न लिखी थी। मैं डरते डरते उनके पास पहुंचा और आहिस्ता आहिस्ता उनसे कहा कि मुझे तो लिखना नहीं आता। मेरी घबराहट देख कर वे मुस्करा दिये और बोले—प्यारे अशोक ! घबराओ मत। लेख लिखना मुश्किल नहीं है। थोड़ी सी समझ और थोड़ी सी हिम्मत की ज़रूरत है। अच्छा, वाक्य बनाना तो जानते हो ?

मैं बोला—जी हाँ।

अध्यापक—पाठशाला के बारे में एक वाक्य बनाओ। तुम्हारी पाठशाला कब खुलती है ?

मैं-मेरी पाठशाला रोज सवेरे १० बजे शुरू होती है।

अध्यापक—शाबाश, पाठशाला के बारे में दूसरा वाक्य बनाओ। तुम्हारी पाठशाला में कितनी श्रेणियाँ पढ़ती हैं।

मैं—छः श्रेणियाँ पढ़ती हैं।

अध्यापक ने मेरे पास बैठे हुए सुभाष से कहा कि तुम भी पाठशाला के बारे में एक वाक्य बनाओ। एक आध मिनट सोचकर सुभाष बोला—

"चार बजे पाठशाला बन्द हो जाती है।"

अध्यापक—एक और भी। पाठशाला का मकान कैसा है?

सुभाष—पाठशाला का मकान बहुत बड़ा है।

अध्यापक—शाबाश, एक और भी।

सुभाष—विनोद बड़ा नटखट है।

अध्यापक—यह तो पाठशाला के बारे में वाक्य नहीं है। पाठशाला तुम्हारे घर से कितनी दूर है?

सुभाष—मेरे घर से पाठशाला दो फर्लांग दूर है।

अध्यापक ने खुश होते हुए हमें बताया कि लेख लिखने के लिए भी हमें इसी तरह करना चाहिए। जिस

विषय पर लेख लिखना हो, उसके बारे में जो कुछ सोच सकें हमें सोच लेना चाहिये और उसे बारी बारी से लिखना चाहिये। तुमने पाठशाला के बारे में ये वाक्य बनाये हैं—

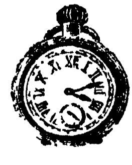
पाठशाला

मेरी पाठशाला रोज़ १० बजे सवेरे शुरू होती है। हमारी पाठशाला में छः श्रेणियां पढ़ती हैं। चार बजे पाठशाला बन्द होती है। पाठशाला का मकान बहुत बड़ा है। मेरे घर से पाठशाला दो फलांग दूर है।

दूसरे दिन अध्यापक ने हमारी श्रेणी के विद्यार्थियों से घड़ी पर पांच छः वाक्य बनाने के लिए कहा। किसी ने कोई वाक्य बनाया और किसी ने कोई। कुल सात वाक्य बने जो इस तरह थे।

घड़ी

घड़ी से हम समय देखते हैं। घड़ी में दो सुइयां होती हैं। घड़ी की बड़ी सुई मिनट बताती है और छोटी सुई घण्टे। घड़ी न हो तो हमारे बहुत से काम ठीक समय पर न हो सकें। घड़ी कई किस्म की होती है। एक हाथ घड़ी,





एक जेब घड़ी, एक दीवाल घड़ी। एक मेज़घड़ी भी होती है।

(अध्यापक को चाहिए कि विभिन्न विषयों पर पहले कुछ बातें बताये और फिर विद्यार्थियों से प्रश्न कर कर के उन्हीं बातों को कहलावे।)

घोड़ा

प्रश्न—इस चित्र में क्या देखते हो ?

उत्तर—यह घोड़े का चित्र है।

प्रश्न—इसके कितने पैर हैं ?

उत्तर—घोड़े के चार पैर हैं।

प्रश्न—इसका शरीर कैसा होता है ?

उत्तर—इसका शरीर दृढ़ और गठीला होता है। शरीर पर छोटे छोटे बाल चमकते हैं।

प्रश्न—क्या घोड़े के सींग होते हैं ?

उत्तर—घोड़े के सींग नहीं होते।

प्रश्न—घोड़ा हमारे किस काम आता है ?

उत्तर—घोड़े पर आदमी सवारी करते हैं। घोड़ा तांगे में जोता जाता है। घोड़ा कहीं कहीं हल भी खैंचता है।

प्रश्न—घोड़े का रंग कैसा होता है ?

उत्तर—घोड़ा कई रंगों का मिलता है। कोई लाल होता है, कोई काला और कोई सफ़ेद। कोई कोई चितकबरा भी होता है।

तुम्हारा गांव

प्रश्न—तुम्हारे गांव का क्या नाम है ?

उत्तर—मेरे गांव का नाम बसीरा है।

प्रश्न—वह कहां बसा है ?

उत्तर—वह लाहौर से डेरागाज़ीखां जाने वाली सड़क पर बसा है।

प्रश्न—वह गांव कितना बड़ा है ?

उत्तर—वह ख़ासा कसबा है।

प्रश्न—उसकी आबादी कितनी होगी।

उत्तर—करीब एक डेढ़ हज़ार की।

प्रश्न—उसमें स्कूल है या नहीं ?

उत्तर—एक मिडिल स्कूल है। एक कन्या पाठशाला है।

प्रश्न—बाज़ार है या नहीं ?

उत्तर—उसमें दो छोटे छोटे बाज़ार हैं।

प्रश्न—बाज़ारों में क्या क्या मिलता है ?

उत्तर—अनाज, दाल, दूध, मिठाई, कपड़ा, दवाइयां आदि सभी मिलते हैं।

प्रश्न—फल भी बिकते है ?

उत्तर—फल तो नहीं बिकते ।

प्रश्न—और क्या क्या नहीं मिलता ?

उत्तर—बर्तन, खिलौने, मेज़, कुर्सी ।

प्रश्न—लोग ज़्यादातर क्या करते हैं ?

उत्तर—ज़्यादा लोग खेती पर गुज़र करते हैं । कुछ दूकानदारी पर गुज़र करते हैं ।

प्रश्न—हस्पताल भी है ?

उत्तर—हां, हस्पताल भी है ।

अभ्यास २१

नीचे कुछ प्रश्न दिये हैं । उनके उत्तर देते हुए लेख लिखोः—

ऊंट

ऊंट की शकल कैसी होती है ? उसकी टांगें, गर्दन, धड़ और पूंछ कैसी होती है ? वह अक्सर कहां पाया जाता है ? उसका स्वभाव कैसा होता है ? वह क्या खाता पीता है ? उससे मनुष्य को क्या लाभ होते हैं ?



गरमी

गरमी की मौसम किन महीनों में आती है ? इस मौसम का

जल और वायु पर क्या असर पड़ता है ? गर्मी में आदमी को क्या अनुभव होता है ? गर्मी से खेती को या फलों को क्या लाभ होता है ? लोग गर्मी से बचने के लिए क्या करते हैं ? गर्मी की मौसम में लोग क्या खाते पीते हैं ? गर्मी में कौन से शाक व फल मिलते हैं ?

रेलगाड़ी

रेलगाड़ी क्या होती है ? यह कहां चलती है ? इसे कौन खींचता है ? बैलगाड़ी और घोड़ागाड़ी से इसमें क्या भेद है ? यह कहां ठहरती है ? इसे चलाने और ठहराने के लिए गार्ड क्या करता है ? रेलगाड़ी से मनुष्य को क्या लाभ है ? यह कितने प्रकार की होती है ?

विचारक्रम

अब तुम छोटे छोटे लेख लिखना सीख गये हो। लेकिन लेख लिखते समय एक और बात का भी ध्यान रखना चाहिये। एक चीज़ पर पाँच दस वाक्य लिख लेना ही काफ़ी नहीं है। उसके प्रत्येक वाक्य में क्रम भी होना चाहिये। हमने ऊपर इस का ध्यान नहीं किया। जो बात शुरु की हो, पहले उसे पूरा करने के बाद दूसरी बात शुरु करनी चाहिए। जहां पाठशाला के खुलने का समय बताया गया

है, उसके साथ ही उसके बन्द होने का समय भी बताना चाहिये। इसी तरह से घोड़े का ज़िक्र करते हुए पहले उसके शरीर के विषय में सब बातें कह देनी चाहियें। पीछे उससे काम लेने की बातें। लेकिन ऊपर हमने इस का ध्यान नहीं रखा। हमने पहले पैर व शरीर की बात की है, फिर वह किस काम आता है, यह बताया है और इसके बाद फिर हम शरीर (उसके रंग) की बात करने लगे।

एक विद्यार्थी ने बिल्ली पर नीचे लिखे आठ वाक्य लिखे –

बिल्ली का रंग काला होता है। बिल्ली रात को भी देख सकती है। बिल्ली चूहे खाती है। इसके शरीर पर सफ़ेद धारियां होती हैं। इसकी आखें नीली होती हैं। बिल्ली को दूध पसंद है। लोग इसे घरों में चूहे खाने के लिये पालते हैं। इसके पैर के नीचे गद्दी होती है, ताकि चलने में आवाज़ न हो।



इन वाक्यों में भी कोई सिलसिला या क्रम नहीं है,

इन्हीं वाक्यों को इस सिलसिले में रखना चाहिए:—

बिल्ली का रंग काला होता है। इसके शरीर पर सफ़ेद धारियां होती हैं। इसकी आखें नीली होती हैं। बिल्ली रात को भी देख सकती है। इसके पैर के नीचे गद्दी होती है, ताकि चलने में आवाज़ न हो। बिल्ली चूहे खाती है। बिल्ली को दूध पसन्द है। लोग इसे घरों में चूहे खाने के लिये पालते हैं।

अभ्यास २२

नीचे कुछ लेख लिखे हैं, लेकिन इनमें वाक्यों का क्रम ठीक नहीं है। तुम क्रम ठीक करो: —

हाथ

मनुष्य के दो हाथ होते हैं। एक हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। एक हाथ दाहिना होता है और एक बायां। सबसे मोटी अंगुली को अंगूठा कहते हैं। बीच की अंगुली सबसे बड़ी होती है। हाथ से आदमी बहुत काम करता है। हर एक छोटी बड़ी चीज़ को आदमी हाथ से उठाता है। बहुत सी चीजें वह हाथ से ही बनाता है।

सोना

सोना बहुत कीमती धातु है। यह बहुत भारी होता है। यह खानों से निकलता है। इसके कई प्रकार के गहने बनते हैं। इसका रंग पीला होता है। इसकी मोहरें भी बनाते हैं। बहुत तेज़ आंच में यह गल जाता है। इसके तार और वर्क़ भी बनाये जाते हैं।

नमक

नमक दाल सब्ज़ी में डाला जाता है। नमक खानों से खोदा जाता है। नमक के बिना दाल सब्ज़ी फीकी लगती है। पहाड़ी नमक दो तरह का होता है—सेंधा और काला। समुद्र के खारी पानी को क्यारियों में भर देते हैं। वह पानी सूरज की गर्मी से भाफ बन कर उड़ जाता है और नीचे नमक रह जाता है। सेंधा नमक खाते हैं। काला नमक दवाइयों में डालते हैं। पंजाब में बहुत साफ़ और ज़्यादा नमक मिलता है। ख्यूड़ा स्टेशन के पास नमक का बहुत बड़ा पहाड़ है।

लेख के संकेत

जिस तरह कहानी में सवाल और संकेत दोनों से काम लिया जाता है, उसी तरह लेख या निबन्ध लिखने के लिये भी प्रश्नों और संकेतों का उपयोग किया जाता है। ऊपर दिये गये लेखों में से दो के संकेत नीचे देखिये:—

घोड़ा

(१) घोड़े के चार पैर होना।

(२) शरीर दृढ़ और गठीला होना।

(३) शरीर पर छोटे छोटे बालों का चमकना।

(४) घोड़े के सींग न होना।

(५) घोड़े पर आदमी का सवारी करना, कभी कभी हल खींचना।

(६) कई रंगों का घोड़ा मिलना, कोई लाल कोई काला, कोई सफ़ेद और कोई चितकबरा होना।

— —

गांव

(१) गांव का नाम बसीरा (२) डेरागाज़ीख़ां वाली सड़क पर बसना (३) खासा कसबा—डेढ़ हज़ार की आबादी

(४) मिडिल स्कूल, कन्या पाठशाला (५) दो छोटे छोटे बाज़ार—अनाज, दाल, दूध, मिठाई, दवाई, कपड़ा आदि मिलते हैं—फल नहीं मिलता (६) बर्तन, खिलौने, मेज़, कुर्सी भी नहीं (७) ज़्यादातर लोगों का खेती पर गुज़र करना, (८) कुछ दुकानदारों का भी होना (९) एक हस्पताल भी।

मेरी बहिन

मेरी बहिन का नाम सुभद्रा है। वह मुझसे दो साल छोटी है। वह पाठशाला जाती है। अभी पहली श्रेणी में पढ़ती है। उसने पहली किताब खतम करली है। थोड़ी सी गिनती भी उसे याद है। सवेरे शाम वह घर में खेलती है। वह अपनी गुड़िया से खूब प्रेम करती है। अगर गुड़िया को कोई उठाले, तो रोती है। मां उसे खूब प्यार करती है। जब वह कपड़े मैले करती है, तब मां उस पर नाराज़ होती है। वह रात को मां से कहानी सुनती है। कहानी सुनते सुनते वह सो जाती है।

प्रश्न

(१) तुम्हारी बहिन का नाम क्या है ?

(२) तुम से वह छोटी है या बड़ी ?

(३) क्या वह पाठशाला जाती है ?

(४) किस श्रेणी में पढ़ती है, कितना पढ़ चुकी है ?

(५) सवेरे शाम वह क्या करती है ?

(६) क्या वह गुड़िया को पसन्द करती है ?

(७) यदि कोई गुड़िया उठाले तो क्या करती है ?

(८) मां क्या उसे प्यार करती है ?

(९) यदि वह कपड़े मैले करदे तो मां क्या करती है ?

(१०) वह मां से कहानी कब सुनती है ?

(११) वह सोती कब है ?

संकेत

नाम सुभद्रा—मुझ से २ साल छोटी —पाठशाला जाती है—पहली श्रेणी में पढ़ना—पहली किताब खतम कर चुकना—थोड़ीसी गिनती भी याद है —सवेरे शाम घर में खेलना—गुड़िया से खूब प्रेम करना—गुड़िया उठाने पर रोती है—मां प्यार करती है—कपड़े मैले करने पर मां नाराज़ होती है—रात को मां से कहानी सुनना—सुनते सुनते सो जाना।

गेहूँ

गेहूं एक मशहूर अनाज है। सारी दुनिया में यह

खाया जाता है। इसकी रोटी बहुत स्वादु बनती है। मैदा और सूजी भी गेहूं से बनते हैं। मैदा और सूजी से कई बढ़िया बढ़िया मिठाइयां बनती हैं। गेहूं सरदियों के शुरु में बोया जाता है। गरमियों के शुरू तक गेहूं पक जाता है। गेहूं के दाने पौधों से अलग कर लिये जाते हैं। पौधे से भूसा बनता है, जिसे गौ बैल आदि जानवर खाते हैं। दानों को चक्की में पीस कर आटा बनाते हैं। आटे की रोटी बनती हैं। गेहूं दरअसल हमारे बहुत काम की चीज़ है। और कोई अनाज इस का मुकाबला नहीं कर सकता।

अध्यापक को चाहिए कि प्रश्नों द्वारा इस लेख को विद्यार्थियों से फिर दुहरावे। फिर इस लेख के संकेत ब्लैकबोर्ड पर लिख कर या विद्यार्थियों से कापी पर लिखाकर उन्हें लेख लिखने के लिए कहे। नीचे के तीन लेखों को भी इसी तरह दो दो बार दुहरावे।

गुलाब का फूल

गुलाब का फूल बहुत सुन्दर होता है। इसे फूलों का राजा कहते हैं। यह कई रङ्गों का होता है। कोई गुलाब लाल होता है, कोई गुलाबी, कोई सफ़ेद। पीला गुलाब

भी कहीं कहीं होता है। सच्चा गुलाब बहुत ख़ुशबू देता है। इसलिए बाग़ों में लोग इसे जरूर लगाते हैं। इस फूल से गुलाबजल बनाते हैं। गुलकन्द भी इस फूल से बनता है। गुलाबजल और गुलकन्द दवाइयों के काम आते हैं। अत्तार लोग गुलाब का अतर निकालते हैं। यह अतर बहुत ज़्यादा ख़ुशबू देता है।

स्कूल का मेरा कमरा

हमारे स्कूल में छः कमरे हैं। मेरा कमरा तीसरा है। इस कमरे में दो दरवाज़े हैं। चार खिड़कियां हैं। खिड़कियों से हवा धूप आती है। कमरे में अध्यापक के लिए एक कुर्सी और मेज पड़ी है। कुर्सी के पास दीवार में एक ब्लैक बोर्ड है। मेज़ के सामने तीन टाट बिछे हैं। उनपर विद्यार्थी बैठते हैं। कमरे का फ़र्श सीमैंट का है। चपरासी उसे रोज़ धोता है। दीवारों पर चार अच्छी अच्छी तस्वीरें टंगी हैं। एक नक्शा भी लटका हुआ है।

मकान में आग

मैं बाज़ार जा रहा था। थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि आस्मान लाल हो रहा है। आग की लपटें भी मैं देखने लगा। बाज़ार में बहुत से लोग उधर भागे जा रहे थे। मैं भी उधर भागा। थोड़ी दूर पर एक मकानमें आग लगी हुई थी। मकान बहुत बड़ा था। उसकी तीन मंज़िलें थी। उसके दरवाज़े, उसकी छत टूट टूटकर नीचे गिर रही थीं। आग बुझाने वाला इंजिन भी आगया था। बहुत से आदमी आग बुझा रहे थे। लेकिन वह तो तेज़ होती जा रही थी। तीन आदमी ऊपर की छत पर खड़े थे। एक बच्चा भी था। वे चिल्ला रहे थे—बचाओ, बचाओ। एक स्काउट ने बड़ी हिम्मत की। एक लम्बी सीढ़ी रख कर वह चढ़ गया और उन्हें उतार लाया। उसके कपड़े भी थोड़े थोड़े जल गये। चार घण्टे तक मकान जलता रहा। फिर जाकर आग बुझी।

अभ्यास २३

नीचे कुछ विषयों पर प्रश्न दिये हैं, उनका उत्तर देते हुए

लेख लिखोः---

(१)

(क) वर्षा या धूप के समय शहर के लोग बाहर आते जाते समय क्या लगाते हैं।

(ख) छाता किस तरह बनाते हैं? उसकी आकृति क्या होती है?

(ग) उसे पकड़ने के लिए क्या इन्तज़ाम करते हैं?

(घ) छाते का अक्सर रंग क्या होता है?

(२)

(क) तुम्हें सबसे अच्छा फल कौनसा लगता है?

(ख) उसकी बनावट कैसी होती है?

(ग) उसका रंग कैसा होता है?

(घ) उसका पौदा कैसा होता है?

(ङ) किस मौसम में वह फल पकता है?

(च) उसका फूल कब लगता है?

(छ) उसे लोग कैसे खाते हैं?

(३)

(क) तुम्हारा घर किस शहर या गांव में है?

(ख) शहर की गली या मुहल्ले का नाम क्या है?

(ग) घर का मुंह किस दिशा में है?

(घ) उसमें कितने कमरे हैं?

(ङ) प्रत्येक कमरे में कितने दरवाज़े, कितनी खिड़कियां हैं?

(च) कमरे कितने बड़े और सहन कितना बड़ा है ?
(छ) पानी और टट्टी का क्या प्रबन्ध है ?
(ज) उस घर में और क्या अच्छाइयां या बुराइयां हैं ?

अभ्यास २४

नीचे कुछ संकेत लिखे गये हैं, उन्हें ध्यान में रखते हुए लेख लिखो—

शहद की मक्खी

शहद की मक्खी छोटी—सुनहरी पंख और उन पर काले काले निशान—छः टांगें—दो आगे और चार पीछे—दो डंक—छत्ता खुद बनाती है—छत्ते में सैंकड़ों हजारों छोटे छोटे घर—हर एक घर की छः छः दीवारें—फूलों पर उड़ना—वहां से टांगों में मीठा रस लाना—



इन घरों में भरना—छत्तों से मोम भी बनना—छेड़ने पर मक्खी का डंक मारना—धुआं जलाने से मक्खी उड़ाना और फिर शहद इकट्ठा करना—शहद का दवा के काम आना।

सूर्य

सूर्य का पूर्व में सवेरे निकलना—रोशनी फैलाना—धूप होना—

सूर्य के ऊपर बढ़ने के साथ धूप और गर्मी में तेज़ी—दोपहर को सख़्त—हवा भी गरम—गर्मी व धूप—बाहर निकलना कठिन—दोपहर के बाद सूर्य का नीचे जाना—शाम के समय धूप व गर्मी की कमी—पश्चिममें अस्त होना और रात आना—सरदियोंमें सूर्य देरी से निकलता और जल्दी अस्त होता—धूप व गर्मी भी कम—सूर्य अनाज व फलों को पकाता है—हमारी तन्दुरस्ती बनाता है।

तांगे मोटर की टक्कर

बाज़ार में जाना—एक जगह भीड़ देखना—वहां पहुँचकर देखना एक घोड़ा पड़ा हुआ—शरीर लहूलुहान—सख़्त चोट—तांगा टूटा हुआ—पहिया नीचे तीन टुकड़े—पास ही एक मोटर—लोगों से पूछना क्या हुआ—मोटर तांगा टकराने की कथा—मोटर वाला तेज़ चला रहा था—दूसरी ओर से तांगा आना—दोनों ने एक दूसरे को नहीं देखा—टकराना और तांगा टूटना—घोड़ा लहूलुहान—सिपाही का मोटर ड्राइवर को ले जाना।

(अध्यापकों को चाहिए कि रीडरों में आने वाले लेखों को भी एक बार पढ़वा कर प्रश्नों व संकेतों द्वारा उन्हें दुहरावें।)

अभ्यास २५

नीचे लिखे विषयों पर लेख लिखो। कोई लेख १५ वाक्यों से कम न हो।

चिट्ठीरसां, मेरी पोशाक, मेरी माता, साबुन, हाज़िरी रजिस्टर, पैर।

पत्र लिखना—१

एक दिन मेरी अध्यापिका ने कहा—एक हफ़्ते बाद हमारी पाठशाला का जलसा है, उस दिन सब को पीली धोती पहन कर आना चाहिये। जिसके पास न हो, वह माँ से कह कर रंगवाले। मैंने कहा कि मेरी माताजी तो यहां नहीं हैं, वे दिल्ली गयी हुई हैं।

अध्यापिका ने कहा कि उन्हें पत्र लिख दो वे या तो आजावेंगी, या किसी आते जाते के हाथ भिजवा देंगी।

मैं ने कहा कि मुझे तो पत्र लिखना नहीं आता।

वे बोलीं—पत्र लिखना मुश्किल नहीं है। तुम तो कहानी और छोटे छोटे लेख लिखना सीख गई हो। पत्र तुम आसानी से लिख सकती हो। आज तुम्हें यही सिखाऊंगी। जिसे पत्र लिखना हो, पहिले उसका नाम लिखा जाता है। उसे तुम जिस नाम से बुलाती हो, वही लिखना चाहिये, उसका असली नाम नहीं। माताजी, पिताजी, चाचाजी, मामाजी, अध्यापिकाजी, लालाजी,

आदि ऐसे नाम हैं, जिन से तुम अपनी माता, पिता, अध्यापिका आदि को बुलाती हो। इन को पत्र लिखते समय सब से पहले यही नाम लिखना चाहिये। तुम अपने माता पिता या अध्यापिका से मिलते समय जो अभिवादन करती हो, वही पत्र में भी लिख दो। कोई नमस्ते कहती है, कोई प्रणाम करती है। तुम जो कुछ कहती हो, वही लिखो माताजी, नमस्ते। पिताजी, प्रणाम। चाचाजी, नमस्कार।

इतना लिखने के वाद तुम्हें जो कुछ खास बात लिखनी हो, वह लिख दो। सुशीला को धोती रंगवानी है। वह लिख सकती है कि—

माताजी, नमस्ते।

एक हफ़्ते बाद हमारी पाठशाला का जलसा है। अध्यापिकाजी ने कहा है कि उस रोज़ सब पीली साड़ी पहन कर आवें। मेरे पास पीली धोती नहीं है। आप जल्दी भिजवा दें। मैं खुश हूं।

इसी तरह हर एक लड़का या लड़की जो कुछ लिखना चाहे, लिख दे। पत्र को समाप्त करते हुए अपना नाम

लिखना चाहिये, लेकिन सिर्फ अपना नाम नहीं। जिस को तुम पत्र लिख रही हो, उससे तुम्हारा क्या सम्बन्ध है, यह भी लिख दो। जैसे—आपकी पुत्री सुशीला, आप का शिष्य मोहन, आपका भतीजा विजय आदि। अब तुम्हारी चिट्ठी पूरी हो गई।

पत्र के भाग

हमें जब किसी से कोई काम होता है, हम उमसे बात कर लेते हैं। लेकिन जब वह आदमी पास न हो, तब पत्र के द्वारा उमसे बात की जाती है। पत्र भी इस तरह लिखना चाहिये, जैसे हम उससे बातें करते हों। पत्र के कई हिस्से होते हैं:—

१—सम्बोधन—माताजी, पिताजी, आदि

२— अभिवादन—नमस्ते, प्रणाम, नमस्कार, आदि

३—मुख्य विषय—जो खास बात लिखनी हो

४—लिखने वाले का नाम—आपकी पुत्री, आप का शिष्य, आपका भाई ।

पत्रों के कुछ नमूनें

(१)

मामाजी,

नमस्ते ।

मैं प्रसन्न हूं । मुझे कहानियाँ बहुत अच्छी लगती हैं । कहानियों की कोई पुस्तक मुझे भिजवा दीजिये । उस में तस्वीरें भी बहुत सी हों ।

आपकी भानजी

शकुन्तला

(२)

बहिनजी,

नमस्ते ।

आजकल मेरा दिल बहुत उदास है । आप कब आवेंगी । जल्दी आवें । मेरी सलेट टूट गई है, वह भी लेते आवें । छोटी बहिन कमला रोज़ मां से गुडिया मांगती है । माताजी कहती हैं कि शहर से दो गुड़ियां भी लेती आवें ।

आपका भाई

राजाराम

(३)

चाचाजी,

प्रणाम

पिता जी बीमार पड़े हैं। आप जल्दी आजावें। माता जी ने कहा है कि चाचीजी को भी लेते आवें।

आपका भतीजा

दिलीपसिंह

(४)

पिताजी,

नमस्ते।

मैं तीसरी श्रेणी में पास हो गया हूं। अब चौथी श्रेणी में पढ़ूंगा। मुझे चौथी की किताबें मंगवा दीजिये।

आपका पुत्र

सुभाष

(५)

माताजी,

प्रणाम

कल मामाजी यहां आये थे। वे मेरे लिए कुछ

कपड़े लाये थे। मुझे कपड़े बहुत पसन्द हैं। आप कब आवेंगी ?

आपकी पुत्री

कमला

(६)

भाईजी,

नमस्कार

मैं खुश हूं। छोटी बहिन भी प्रसन्न है। आप कब आवेंगे ? जब आवें, मेरे लिए गेंद बल्ला ज़रूर लेते आवें। बहिन कहती है कि मेरे लिए भी कुछ लाना।

आपका छोटा भाई

अभ्यास २६

(१) बहिनजी बीमार पड़ी हैं। माताजी को पत्र लिख कर उन्हें बुलाओ।

(२) सर्दी आ गई है और गरम कोट तुम्हारे पास नहीं है। तुम अपने पिताजी को कोट भेजने के लिए लिखो।

(३) तुम्हारा छोटा भाई पैदा हुआ है, पिताजी बाहर हैं, उन्हें सूचना दो।

(४) तुम छुट्टियों में घर जाने वाले हो। भाई जी को स्टेशन पर आने के लिए लिखो।

(५) तुम चार दिन के बुखार के बाद अच्छे हो गये हो, इसकी सूचना माताजी को दो।

मित्रों को पत्र

मित्रों को भी पत्र लिखते समय ऊपर लिखी बातों का ध्यान रखना चाहिये। यहाँ तीन पत्र दिये जाते हैं:—

(१)

प्रिय मित्र,

नमस्ते।

पिताजी की बदली अचानक अजमेर से नसीराबाद हो गई, इस लिए मुझे भी आ जाना पड़ा। मैं तुम से मिल भी न सका। नसीराबाद अच्छी जगह है। छुट्टियों में यहां जरूर आना। मेरी दो किताबें तुम्हारे पास पड़ी हैं, वे भी लेते आना।

तुम्हारा मित्र

घनश्याम

(२)

प्रिय घनश्याम,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं होली की छुट्टियों में आऊंगा। तुम्हारी किताबें भी लेता आऊंगा। वहां का स्कूल कैसा है? हमारे स्कूल से क्या बड़ा है? लालचन्द्र और शिवकुमार तुम्हें नमस्ते कहते हैं।

तुम्हारा मित्र

जुगलकिशोर

(३)

प्रिय ईश्वर देवी,

गरमी की छुट्टियों में मैं तुम्हारे बहनोईजी के साथ काश्मीर गई थी। वह जगह तो बहुत ही सुन्दर है। पानी और बाग के बहुत अच्छे अच्छे दृश्य हैं। पहाड़ भी बड़े २ हैं। मैं तो थोड़ा सा चढ़ कर थक जाती थी। गरम कपड़ा तो वहां बहुत तैयार होता है। कोट, कमीज़ के ऊनी कपड़े बड़े सुन्दर मिलते हैं। लोइयां भी बहुत अच्छी बनती हैं। बहुत से यात्री डूंगों में रहते हैं। नौका पर बने हुए घर को डूंगा कहते हैं। मैं भी इनमें रही थी। ये डूंगे पानी

में तैरते रहते हैं। इनमें मुझे खूब आनन्द आया। तुम साथ होती, तो बहुत अच्छा होता। तुम छुट्टियों में कहां गई थी?

उत्तर जल्दी देना।

तुम्हारी प्यारी सहेली
प्रकाशवती

अभ्यास २७

(१) एक मित्र के पिता का देहान्त हो गया है, उसे पत्र लिख कर सहानुभूति प्रकट करो।

(२) तुम एक सप्ताह बाद मित्र के पास गाड़ी से जाना चाहते हो, उसे स्टेशन पर आने के लिए लिखो।

(३) तुम्हारा मित्र बीमारी से उठा है। उसे जलवायु परिवर्तन की सलाह देते हुए अपने पास बुलाओ।

(४) तुम्हारा मित्र परीक्षा में पास हुआ है, उसे बधाई का पत्र लिखो।

(५) तुम्हारे मित्र ने तुम्हें पांच दिन के लिए अपने पास बुलाया है, उसे लिखो कि पिता जी की बीमारी की वजह से तुम नहीं आ सकते।

प्रार्थना पत्र

जब कभी अध्यापक से छुट्टी लेने की ज़रूरत हो, फ़ीस माफ़ करानी हो, या कोई और प्रार्थना करनी हो, तब उन्हें प्रार्थना-पत्र लिखना चाहिये। कुछ पत्र नीचे दिये जाते हैं।

श्रीयुत हैडमास्टर जी,

नमस्ते।

मेरा छोटा भाई दो दिन से बीमार है (अथवा मेरे चाचा का विवाह है, या मैं बीमार हूं) इसलिये दो दिन की छुट्टी देने की कृपा करें।

आपका आज्ञाकारी

वीरेश्वर

पूज्य अध्यापिका जी,

नमस्ते।

कल जब मैं स्कूल से आरही थी, रास्ते में कीचड़ की वजह से फिसल गई। मेरे पैर में एक कील चुभ गया। अब मैं चल फिर नहीं सकती। इसलिये पांच दिन की

छुट्टी देने की कृपा करें ।

आपकी विनीता

शशिप्रभा

माननीय हैडमास्टर जी,

नमस्ते ।

सेवा में निवेदन है कि मेरे बड़े भाई रामकुमार जी को तार देकर पिता जी ने बुला भेजा था। इसलिये वे आप को अर्ज़ी भी न देसके । अब वे वहां जाकर बीमार पड़ गये हैं । प्रार्थना है कि उनकी दस दिन की छुट्टी स्वीकार करने की कृपा करें और उनकी गैरहाज़िरी के लिए जो जुरमाना आपने किया है, वह भी न करें ।

आशा है, प्रार्थना स्वीकार करेंगे ।

आपका आज्ञाकारी

वेदकुमार

(इन पत्रों में आदरसूचक शब्द (श्रीयुत, पूज्य, माननीय, आज्ञाकारी, विनीता, आदि) लिखे गये हैं। इनका उल्लेख ही कर दें। इस पर अधिक प्रकाश आगे के पृष्ठों में डाला गया है। अध्यापक भी विद्यार्थियों पर इन शब्दों के लिए पीछे ज़ोर दें।)

पत्र लिखना—२

पता लिखना

एक दिन मैंने पिता जी से कहा कि आपने मेरे पत्रका जवाब क्यों नहीं दिया ? मैंने दस दिन पहले लिखा था। वे हैरान होकर बाले—मुझे तो तुम्हारी कोई चिट्ठी नहीं मिली । क्या तुमने मेरा पता लिखा था ? मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। मैं पता लिखना भूल गया था। तब वह उन तक पहुंचता ही कैसे ? मुझे पिता जी ने समझाया कि चिट्ठी पर पता ज़रूर लिखा जाता है। उसके बिना वह किसी मतलब की नहीं रहती। तब से मैं चिट्ठी लैटर बक्स में डालने से पहले एक वार देख लिया करता हूं कि पता लिखा है या नहीं। पता न लिखने से डाकखाने को यह मालूम कैसे हो कि चिट्ठी कहां भेजनी है, किसे थेनी है ?

पता लिखने का तरीका यह है। जिसे भेजनी है, पहले उसका असली नाम। मेरे पिता का नाम कृष्ण चन्द्र है, तो मैं लिखूंगा कि

पण्डित कृष्णचन्द्रजी

नाम के नीचे गली या मुहल्ले का नाम, जहां वे रहते हैं। जैसे—

चिरञ्जीलाल गली

फिर डाकखाने वाले शहर का नाम। जैसे

डा० खा० दिल्ली।

पूरा पता इस तरह हुआ—

पं० कृष्णचन्द्र जी
चिरंज़ीलाल गली
डा० खा० दिल्ली

कार्ड या लिफ़ाफ़े के पिछले हिस्से पर जहां टिकट लगा होता है, पता लिखा जाता है। दो चार पते ये हैं।

पण्डित जयदेव जी
श्रीनगर रोड
डा० खा० अजमेर

लाला रामचन्द्र जी
बाज़ार चौक
डा० खा० मुज़फ्फ़रगढ़

चौ० सुन्दरदास जी
नई बस्ती
डा० खा० दिल्ली

पं० रामनारायण शर्मा
दारा गञ्ज
अलाहाबाद

श्रीमती ईश्वरदेवी जी
हाईस्कूल के पास
डा० खा० पाकपट्टन

अभ्यास २८

(१) तुम्हारे पिता जी काश्मीर में गये हैं और श्रीनगर की आर्य समाज में ठहरे हुए हैं। उनका पता लिखो।

(२) तुम्हारी बहिन लाहोर की सनातनधर्म पाठशाला ग्वालमण्डी में पढ़ती है। उनका पता लिखो।

(२) तुम्हारा मित्र हरिकृष्ण हाथी भाटा अजमेर में रहता है, उसका पता लिखो।

(४) तुम्हारी सहेली प्रेमलता राजा बाज़ार नई दिल्ली में अपने पिता डा० रामदत्त के साथ रहती है, उसका पता लिखो।

(५) तुम्हारे मामा पं० धर्मदेव जी डा० खा० गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में रहते हैं, उनका पता लिखो।

(६) तुम्हारे पिता म० श्याम लाल जी दिल्ली स्टेशन पर प्लैटफार्म इंस्पैक्टर हैं, उनका पता लिखो।

तारीख व अपना पता

एक दिन मैंने दिल्ली शारदामन्दिर को तीन किताबें भेजने के लिए पत्र लिखा। दस दिन होगये, कोई जवाब नहीं आया। मैंने दुकान का पता लिखा था, इसमें कोई सन्देह नहीं। कुछ दिन बाद मेरे एक मित्र दिल्ली जा रहे थे। मैंने उनसे कहा कि शारदामन्दिर नई सड़क पर जाकर दरयाफ़्त करना कि किताबें क्यों नहीं भेजी? उन्होंने दो दिन बाद वापस आकर कहा कि तुम्हारा पत्र तो मिल गया था, लेकिन तुमने अपना पता नहीं लिखा था। वे किस पते से जवाब देते?

हर एक पत्र पर शुरु में ही अपना पता लिखना चाहिये और उसके नीचे उस दिन की तारीख लिखनी चाहिये। जैसेः— (१) ३८ निरंजीलाल बिल्डिंग्स
सब्ज़ीमण्डी, दिल्ली
२ अक्टूबर १९३६

(२) गुरुकुल कांगड़ी
जि० सहारनपुर (यू.पी.)
५ मई १९३५

(३) नया बाजार, अजमेर
१५ दिसम्बर १६३३

अपना पता लिखने से पढ़ने वाले को जवाब देने में बड़ी सुविधा होती है। जब पत्र पाने वाला बहुत नज़दीकी आदमी हो, उसे पता याद ही हो, तब भले ही अपना पता न लिखो, लेकिन अच्छा है कि यह आदत बनी रहे। तारीख देने से भी पढ़ने वाले को बात समझने में सुविधा होती है।

अभ्यास २६

(१) तुम मुलतान शहर के हरम दरवाज़ा में रहते हो, अपना पता व पत्र लिखने की तारीख लिखो।
(२) तुम हस्पताल रोड़, लाहौर भारती भवन में रहते हो। अपना पता लिखो।
(३) तुम नया बाजार, दिल्ली में स्थित लक्ष्मी बीमा कम्पनी के दफ्तर में रहते हो, अपना पता लिखो।
(४) तुम अपने पिता ला० रामरूपजी के साथ रेलवे स्टेशन अम्बाला में रहती हो, अपना पता लिखो।

अभ्यास ३०

नीचे लिखे अशुद्ध पतों को ठीक करो:—

(१) बिड़ला मिल्स, दिल्ली सबज़ी मण्डी, श्री दिलीपसिंह
(२) रांची, पं० धर्मवीरजी, स्टुअर्ट रोड
(३) लाल गुरुदत्तजी मेरठ, दिल्ली गेट

पत्र लिखना—३

शिष्टाचार

पत्र लिखते हुए नीचे लिखी बातों का ध्यान रखने के लिए हम पहले कह आये हैं:—

(१) अपना पता मय तारीख

(२) सम्बोधन

(३) अभिवादन

(४) मुख्य पत्र का विषय

(५) नीचे अपना नाम

(६) जिसे पत्र भेजना है, उसका पता।

लेकिन एक और बात का भी ध्यान रखना चाहिये। जिसे पत्र लिखना है, यदि वह अपने से बड़ा है, तो आदर का शब्द, यदि अपने बराबर है, तो स्नेह और छोटा है, तो प्रेम का शब्द ज़रूर लिखना चाहिये। यह शिष्टाचार है। जैसे—माता, पिता व गुरु आदि को पूज्य मान्य, माननीय, आदरणीय आदि। अपने मित्र को प्रियवर, स्नेही आदि। अपने से छोटे को प्यारे, प्रिय, आदि।

कुछ उदाहरण यहां दिये जाते हैं:—

मानवीय गुरुजी,

नमस्ते

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम

आदरणीय माता जी,

नमस्कार

प्रिय भाई या स्नेही बंधु, नमस्ते

प्यारे अशोक,

आशीर्वाद

प्रिय सुभाष,

चिरंजीव

ऐसे आदर सूचक शब्द लिखने से बड़े लोग खुश रहते हैं, अपने विनय तथा शिष्टाचार का दूसरे पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

जहां सम्बोधन में शिष्टाचार का ध्यान रखना चाहिये, वहां नीचे अपना नाम लिखते हुए भी शिष्टाचार नहीं भूलना चाहिये।

आपकी प्यारी पुत्री, आपका विनीत शिष्य, आपका आज्ञाकारी पुत्र, आपका स्नेहाकांक्षी आदि

कुशल-समाचार

पत्र लिखते समय दो एक बातें और भी ध्यान में रखनी चाहिये। अपने रिश्तेदारों या मित्रों को पत्र लिखते समय जहां अपनी कुशलता का समाचार लिखना चाहिये, वहां उनकी कुशलता का समाचार भी पूछना चाहिये यदि वहां अपने से छोटे बच्चे हों, तो उनके लिए भी एक आध शब्द लिख देना चाहिये। इससे वे बच्चे बहुत खुश होते हैं।

पत्र में लिखे वाक्य छोटे छोटे होने चाहियें। पत्र साफ़ लिखना चाहिये। कोई स्याही का धब्बा या कोई गन्दा निशान पत्र पर न हो। ऐसा लिखो कि पत्र साफ़ बिना दिक्कत के पढ़ा जाय। अब कुछ पत्र देखिये:—

(१)

कन्या पाठशाला, तेलीवाड़ा, दिल्ली

२५ अक्टूबर १९३६

पूजनीय माताजी, सादर प्रणाम

कल दसहरा था। हमारी पाठशाला में छुट्टी थी।

मैं भी स्कूल की अपनी सहेलियों के साथ रामलीला देखने गयी थी। वहां बड़ी भीड़ थी। खूब तमाशा देखा। मैंने छोटे भैया के लिये दो खिलौने भी लिये हैं। उन्हें देख कर वह बहुत खुश होगा।

मैं प्रसन्न हूं। भैया भी खुश होगा। आप कलकत्ते से कब आवेंगी। मेरे लिए अच्छे अच्छे कपड़े जरूर लाना।

आपकी प्यारी पुत्री

कुसुमा

श्रीमती सत्यवती जी

१०, अपर सरकुलर रोड

कलकत्ता

(२)

डी. ए. वी. स्कूल

मुलतान

२ मई १६३६

पूज्य पिता जी,

नमस्ते।

कल हमें इम्तिहान का परिणाम सुनाया गया। मैं

चौथी श्रेणी पास कर चुका हूं। मुझे नम्बर भी बहुत अच्छे मिले हैं। सारी श्रेणी में मैं तीसरा रहा हूं। अब पांचवीं की किताबें खरीदनी हैं। चार रुपये भिजवा दीजिये। मुझे नये कपड़े भी बनवाने हैं। आप जब आवें, लेते आवें। छोटी बहन दुलारी तो खुश होगी। माताजी को प्रणाम।

आपका प्यारा पुत्र

हरिश्चन्द्र

श्री परमानन्द जी

मंत्री आर्यसमाज

मुज़फ़्फ़रगढ़

(३)

जौहरी बाजार जयपुर

१५ दिसम्बर १६३६

प्यारी बहिनजी,

नमस्ते

मैं सकुशल हूं। आशा है कि आप भी प्रसन्न

होंगी। यहां आज कल सर्दी बहुत पड़ रही है। माताजी को जुकाम खांसी की शिकायत हो गई थी। अब तो उन्हें आराम है। आप चिन्ता न करें। आप के पत्र से मालूम हुआ कि प्रिय हरि की तबीयत खराब है। आप वापसी डाक लिखें कि अब उसका क्या हाल है? माताजी पूछती हैं कि आप यहां कब तक आवेंगी? चि० हरि को प्यार।

आपकी प्यारी बहिन

राजेन्द्रा

श्रीमती गायत्री देवीजी

मार्फ़त पं० परम वेदालंकार

डा० खा० रोपड़

ज़िला अम्बाला (पंजाब)

मार्फत पं० गौरीशंकरजी
सूरजपोल, उदयपुर
१५ सितम्बर १९३६

पूज्य चाचा जी, प्रणाम।

मैं कल अपने पिता जी के साथ यहाँ पहुंचा। यहां के तो कई नज़ारे बहुत अच्छे हैं। बरसात खतम हो चुकी है। कई तालाब खूब भरे हुए हैं, बहुत सुन्दर लगते हैं। राजमहल भी गज़ब के हैं। न जाने किसने बनाये हैं ? मेरी तो इच्छा होती है कि १०–१५ दिन यहाँ रहकर देखूं। यहां एक अजीब बात देखी है। यहां का रुपया हमारे रुपये से नहीं मिलता। इसकी शकल हमारे रुपये से खराब होती है। मैं एक रुपया लाऊंगा। सुशील और इन्दिरा को प्यार।

आपका प्यारा भतीजा
कृष्णकुमार

डा० लक्ष्मी कुमार
स्वदेशी सुगर मिल्स
डा० खा० खतौली (यू० पी०)

५१. तुको गंज इन्दौर।

१२ अगस्त १९३५

मेरी प्यारी सहेली सरस्वती,

नमस्ते।

बहुत दिन हो गये, तुम्हारे दर्शन नहीं हुए। न तुमने कोई पत्र ही लिखा। यहां आजकल मेरे पिता जी बीमार हैं, इसलिये दिल उदास रहता है। वे कहते हैं कि अच्छे होने पर वे दिल्ली चलेंगे, तब तुम्हारे भी दर्शन होंगे। दिल्ली से आगे हरिद्वार, देहरादून भी जावेंगे। तुम भी पिता जी को या माता जी को तैयार कर लो। तो हरिद्वार व देहरादून की सैर मज़े से होगी। तुम आज कल किस श्रेणी में हो ? मैं तो चौथी में हूं। मेरा छोटा भाई पत्र लिखने नहीं देता, इसलिये अब बस करती हूं। पत्र ज़रूर लिखना।

तुम्हारी प्यारी सखी

चन्द्रकला

मरस्वती देवी
मार्फ़त चौ० बलदेव जी
बहूजी की गली
दिल्ली।

लिफ़ाफ़े और कार्ड का मूल्य

पोस्टकार्ड और लिफ़ाफ़े की टिकटों के दाम सरकार घटाती बढ़ाती रहती है। जब जैसी ज़रूरत हो, वैसा कर लेती है। कभी कार्ड का दाम एक पैसा था, लेकिन आज कल तीन पैसे हैं। लिफ़ाफ़े पर आज कल चार पैसे के टिकट लगते हैं। भारी होने पर ज़्यादा के भी टिकट लगाये जाते हैं। यदि पोस्ट कार्ड पर तीन पैसे का टिकट न हो, तो डाकखाना उसे नहीं पहुंचाता। यदि लिफ़ाफ़े पर पूरे टिकट न हों, तो डाकखाना उस पर बैरंग, लिख के पत्र पानेवालें से दुगनें पेसे वसूल कर लेता है।

अभ्यास ३०

(१) तुम्हारे पैर में फोड़ा हो गया है, तुम पिताजी को

लिखो कि आकर देख जावें।

(२) तुम्हारी माताजी चाहती हैं कि अपने स्वास्थ्य का समाचार उन्हें लिखो, ताकि चिन्ता दूर हो।

(३) बड़े भाई को अपने स्कूल की बाबत १० पंक्तियों का पत्र लिखो।

(४) अपनी बहिन को अपनी दिनचर्या लिखो।

(५) अपने मामा को लिखो कि वे लाहौर से आते समय तुम्हारे लिए एक बाइसिकल लेते आवें।

(६) चाचाजी को लिखो कि माताजी ने चाची जी को बुलाया है। जल्दी भेज दें।

(७) अपनी एक सहेली (या मित्र) को अपने घर पर आने का निमन्त्रण दो।

(८) अपने हैडमास्टर से अपनी बहन की शादी पर चार दिन की छुट्टी मांगो।

कामकाजी पत्र

ऊपर हमने अपने रिश्तेदारों व मित्रों को पत्र लिखने का तरीका बताया है, लेकिन बहुत से अन्य व्यक्तियों को भी पत्र लिखे जाते हैं। कभी कोई पुस्तक या अन्य वस्तु मंगानी होती है, कभी रुपये की रसीद देनी होती है, कभी रुपये का तकाजा करना होता है। कारोबारसम्बन्धी इन

पत्रों को कामकाजी पत्र कहते हैं। रिश्तेदारों को, मित्रों को निजी पत्र लिखे जाते हैं। इन दोनों में थोड़ा बहुत फ़र्क होता है। काम काजी पत्र में—

१—सम्बोधन में आदरसूचक शब्द की ज़रूरत नहीं है। माननीय, आदरणीय किसी को नहीं लिखना चाहिये। महोदय, प्रिय महोदय लिखने चाहियें।

२—कुशलता के समाचार न देने चाहियें, न पूछने चाहियें।

३—पत्र संक्षिप्त लिखना चाहिये।

४—अपने पते और तारीख के नीचे पत्र पाने वाले का पता भी बाईं ओर लिखना चाहिये।

कुछ पत्र

कुछ पत्र नीचे दिये जाते हैं।

गली रावलिया, लाल दर्वाज़ा मथुरा

५ अगस्त १९३४

मैनेजर शारदामन्दिर,

नई सड़क, दिल्ली।

प्रिय महोदय,

निम्नलिखित पुस्तकें वी. पी. से जल्दी भजने की

कृपा करें:—

१. .... १ प्रति।

२. .... १ प्रति।

३. .... २ प्रति (सजिल्द)

भवदीय

कृष्णकुमार

मैनेजर

शारदामन्दिर

नई सड़क

दिल्ली

—

आर्य कन्या पाठशाला

तेलीवाड़ा, देहली।

१० अक्टूबर १९३५

मैनेजर राम होज़री वर्क्स,

रोशनआरा रोड, देहली।

प्रिय महोदय,

हमें अपने छात्रालय में रहने वाली छात्राओं

के लिए ३० जोड़े मोज़े चाहिए। यदि आप पत्र लाने वाले इस चपरासी के हाथ एक नमूने का जोड़ा और उसके दाम लिखकर भेज सकें, तो कृपा होगी। कन्या-पाठशाला के लिए आप दाम कुछ रियायती लगावेंगे, ऐसी आशा है।

भवदीया
सुभद्रा

श्रीयुत मैनेजर,
राम होज़री वर्क्स
रोशनआरा रोड,
दिल्ली

——

स्वतंत्र प्रेस, मेरठ।
४ जुलाई १९३३

बद्लूमल हलवाई
लाल कुरती, मेरठ

महाशय,

पिछले जून महीने में जो दूध दही तुम्हारे यहां

से आया है, उसका हिसाब करके जल्दी भेज दें। हिसाब को मिलाने के बाद रुपये दे दूंगा।

भवदीय

विश्वनाथ

बद्लूमल हलवाई

लाल कुरती

मेरठ

— — रेलवे स्टेशन

नसीराबाद

१५ सितम्बर १६३६

राजाराम तुलसीदास एण्ड कं०

मदार गेट, अजमेर

प्रिय महोदय,

आपका भेजा हुआ सामान मिला, सामान तो आर्डर के मुताबिक है, लेकिन दाम कुछ ज़्यादा लगाये हैं। शायद आपके आदमी से कुछ ग़लती हो गई है। आप

का बीजक मैं वापस भेज रहा हूं। इसे सुधार कर फिर भेजें।

भवदीय

रामरतन

राजाराम तुलसी दास एण्ड कं०

'मदार गेट'

अजमेर

स्वदेशी भण्डार

चांदनी चौक, दिल्ली

१५ अप्रैल १६३२

श्री मनोहर लाल जैन

कूचा पातीराम, सीताराम बाजार दिल्ली

प्रिय महोदय,

आप आज से करीब दो महीने पहले २० फरवरी

१९३२ को कुछ सामान लेगये थे। आपने दूसरे दिन दाम भिजवाने के लिये कहा था। लेकिन कई बार तकाज़ा करने पर भी दाम नहीं मिला। इससे हमें बहुत हर्ज हो रहा है। आप कल तक दाम ज़रूर भिजवाएँ।

भवदीय

रामलाल

मैनेजर स्वदेशी भण्डार

	श्री मनोहर लाल जैन कूचा पाती राम सीता राम बाज़ार दिल्ली

गली समोसां, दिल्ली

१४-४-३६

श्रीयुत स्टेशन मास्टर, नई दिल्ली

प्रिय महोदय,

कृपाकरके जी० आई० पी० रेलवे का नया समयविभाग इस नौकर के हाथ भेज दीजिये। दाम इसके

हाथ भेज रहा हूं ।

आपका रतीराम

स्टेशन मास्टर
नई, दिल्ली

अभ्यास २१

(१) पत्र लिखकर दवा बेचने वाले से दवा का मूल्य पूछो।

(२) घर में एक बीमार है, डाक्टर से पत्र द्वारा पूछो कि वह कब बीमार को देखने आ सकता है ।

(३) अदालत में एक मुकदमा पेश है। अपने गवाह को लिखो कि वह ज़रूर वक्त पर गवाही देने के लिये हाज़िर हो ।

(४) तुम्हें कुछ पुस्तकें मंगानी हैं । उनके सम्बन्ध में एक पुस्तक प्रकाशक को लिखकर उसका नवीन सूचीपत्र मंगाओ।

(५) एक दूकानदार से शिकायत करो कि उसने जो मसहरियां भेजी हैं, उनमें से तीन बहुत खराब व मैली हैं। ये उसे वापिस लेनी होंगी ।

(६) दूकानदार की हैसियत से एक ग्राहक को लिखो कि उसने तीन महीने से दाम नहीं भेजे।

विविध पत्र

विविध कार्यों के लिए पत्र लिखने के कुछ नमूने यहां दिये जाते हैं:—

३-१२-३६

प्रिय बहन सुशीला,

नमस्ते

कल मेरे भाईजी विवाह करके घर पर आवेंगे। उनके साथ भाभीजी भी आवेंगी। मेरी इच्छा है कि तुम भी आनन्द के इस अवसर पर अवश्य आना। अपने छोटे भैया को भी साथ लेते आना। आशा है, तुम मेरी प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करोगी।

तुम्हारी बहिन

राजरानी

श्री सुशीला देवी

५ वीं श्रेणी

कन्या पाठशाला

नई सड़क दिल्ली

पो० आ० गुरमाणी

जि० मुजफ़्फ़रगढ़

१० । ३ । ३७

महोदय,

मैं 'बालसखा' का ग्राहक हूं। लेकिन अब मैं तीन महीने के लिए अपने पिताजी के साथ हरद्वार जा रहा हूं। इसलिए मेरा 'बालसखा' नये पते पर भेजा करें। मेरा ग्राहक नम्बर १३४५ है। हरद्वार का पता यह होगा—

सूरजमल की धर्मशाला, मार्फ़त चौ० रतनचन्दजी

हरद्वार

आपका—

रविदत्त

मैनेजर

बालसखा

अलाहाबाद

रुपये की रसीद

आज ३ चैत्र सं० १६६२ तदनुसार ५ मार्च सन् १६०३ को लाला कर्मचन्द साहूकार नवानगर से ५०)रु० मूल और १०) रु० ब्याज के प्राप्त हुए। अब कोई लेन-देन नहीं रहा।

रामचन्द्र | एक आना का टिकट | (हस्ताक्षर)

गली हलवाई

अमृतसर

राजा मुहल्ला, पीलीभीत

२४—८—३३

श्री लाला जी,

नमस्ते !

कल पिताजी आये थे। उनसे मालूम हुआ कि आप एक सप्ताह तक दो सौ रुपये कर्ज़ दे सकेंगे। कृपया वापसी डाक लिखें कि मैं कब लेने आऊं ?

आपका

रामकुमार

श्रीयुत रामदत्त

पोस्टमास्टर

अलीगढ़

—— रानी का तालाब, इन्दौर

२६—८—३६

श्री रामकुमार जी.

आपका पत्र मिला। आप शनिवार तक आ जाइये,

फिर मैं बाहर जारहा हूं। ब्याज एक रुपया सैकड़ा होगा, तमस्सुक भी लिख देना होगा।

आपका

सुदर्शन

रसीद

बीस रुपये बाबत मूल्य पक्की ईंट अव्वल दरजा २५०० (दर ८ रु० १००० ईंट) वसूल पाये।

ह० गोविन्दा

ता० १६ ५-३१

डी. ए. वी. प्राइमरी स्कूल

दिल्ली

२-११-३१

श्रीमान् कप्तान साहब

सनातनधर्म प्राइमरी स्कूल

महाशय,

हमारे स्कूल की टीम नं० २ आपकी टीम नं० १

से कबड्डी का मैच खेलना चाहती है। यदि आप स्वीकार करें, तो रविवार सवेरे ६ बजे हमारे स्कूल के मैदान में पहुंचने की कृपा करें। एक दिन पहले अपने निश्चय से सूचित करने की कृपा करें।

आपका

रामकिशोर

कप्तान टीम नं० २

बातचीत

दूध

अध्यापक—किन किन पशुओं का लोग दूध पीते हैं ?

देवदत्त—लोग गाय और भैंस का दूध पीते हैं।

अ०—गाय भैंस के सिवा किसी और भी पशु का दूध पिया जाता है ?

देव०—हां जी, बकरी का दूध भी कई लोग पीते हैं।

अ०—दूध से क्या क्या चीज़ें बनती हैं ?

देव०—दूध से दही, मक्खन और घी बनता है ?

अ०—दही, मक्खन और घी के सिवा दूध से क्या बनता है ?

देव०—दूध से खोया भी बनाया जाता है।

अ०—खोये का क्या करते हैं ?

देव०—खोया खाया जाता है। खोये से कई अच्छी अच्छी मिठाइयां बनती हैं।

विद्यार्थी कहानियों और प्रश्नों के प्रकरण में प्रश्नोत्तर का क्रम सीख चुका होता है। इसलिए बातचीत के

अभ्यास में विद्यार्थी को कठिनता न होगी। अध्यापक परिचित पदार्थों और प्राणियों के विषय में ही विद्यार्थियों से बातचीत करें।

अध्यापक पहले एक प्रश्न करे और सब विद्यार्थियों से उसका उत्तर मांगे। जिस विद्यार्थी का उत्तर सबसे अच्छा हो, उसे सब विद्यार्थी दुहरावें। कभी कभी प्रश्न को निषेधात्मक रूप में भी पूछ लिया जाय, तो विद्यार्थी प्रश्न को समझने में ज़्यादा सावधानी से काम लेने लगेंगे। विद्यार्थियों की तर्कशक्ति को भी विकसित करने के लिए एक ही प्रश्न को विविध रूपों में पूछना चाहिये। यदि सम्भव हो, तो जिस पदार्थ के बारे में बात चीत करनी है, उसे दिखा भी दिया जाय। इसी तरह प्रत्येक नई क्रिया, प्रत्येक नये क्रिया विशेषण, प्रत्येक नये विशेषण के लिए विभिन्न संकेत भी कर दिये जांय, जिससे विद्यार्थी वही उत्तर दे सके, जो अध्यापक चाहते हैं।

केवल अध्यापक ही नहीं, विद्यार्थी भी अध्यापक से और परस्पर विभिन्न प्रश्न करें। अध्यापक इस बात का ख़्याल करें कि बातचीत में विषयान्तर न हो जाय और

विद्यार्थी पूर्ण वाक्यों में उत्तर दें ।

वादविवाद

इस प्रकार के प्रश्नोत्तरों के वादविवाद का अभ्यास कराना चाहिये। पहले पहल अध्यापक एक विषय के दोनों पहलुओं को सुना दे। तब दो विद्यार्थी एक एक पक्ष लेकर परस्पर बातचीत करें । यहां एक उदाहरण दिया जाता है ।

शहर और गांव

अशोक—मुझे तो शहर पसन्द है।

सुभाष —मैं तो गांव को पसन्द करता हूं । वहां खुली हवा और धूप मिलती है ।

अशोक—गाँव तो बहुत मैला होता है । वहां सफ़ाई तो कभी होती नहीं ।

सुभाष—लेकिन शहरों में तो हर एक नाली में भी टट्टी और पेशाब की दुर्गन्ध रहती है ।

अशोक—शहरों में तो रोज भंगी और भिश्ती साफ़ कर लेते हैं, मगर गाँवों में तो कभी सफ़ाई होती नहीं।

सुभाष—सफ़ाई न हो तो क्या गांवों में बीमारी तो शहरों से कम होती है।

अशोक—शहरों में डाक्टर तो मिल जाते हैं।

सुभाष—गाव़ों में तो डाक्टरों की जरूरत ही नहीं।

अशोक—गांव तो रहने लायक ही नहीं। न वहां खिलौने मिलते हैं, न बर्तन, न मेज़ कुर्सी और न अच्छे अच्छे कपड़े। शहरों में सब अच्छी चीज़ें बनती हैं और मिलती हैं।

सुभाष—इन चीज़ों में क्या रखा है? सब प्रकार के अनाज, सब्ज़ी, दूध, दही तो गावों में होते हैं। यही मनुष्य के लिए ज़्यादा ज़रूरी हैं। शहर वाले इन चीजों के लिए गांवों का मुंह ताकते हैं।

अभ्यास ३२

नीचे लिखे विषयों पर विद्यार्थियों से वादविवाद कराया जाय।